भू-दर्पण

अंक- तृतीय

वर्षः 2018-19

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग, 5 मानचित्र भवन, गोमती नगर लखनऊ
(विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार)

भू–दर्पण

प्रधान सम्पादक

राजन कुमार निगम
निदेशक

सम्पादक

राजीव कुमार श्रीवास्तव
उपनिदेशक

सम्पादन सहयोगी

प्रदीप कुमार आर्य
अधिकारी सर्वेक्षक

शशी कान्त
अधिकारी सर्वेक्षक

बाल गोविन्द राम
अधिकारी सर्वेक्षक

टंकण कार्य

आशीष कश्यप
प्रवर श्रेणी लिपिक

जय प्रकाश
सहायक

लवकेश
अवर श्रेणी लिपिक

छायांकन

नवीन कुमार
प्रवर श्रेणी लिपिक

ग्राफिक डिजाइन

सन्दीप श्रीवास्तव
सर्वेक्षक

प्रकाशन

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू–स्था0 आकड़ा केन्द्र
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
5–विभूति खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ–226010

मुद्रण

पश्चिमी मुद्रण वर्ग
भारतीय सर्वेक्षण विभाग
पालम, दिल्ली–110010

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है।

राजन कुमार निगम
Rajan Kumar Nigam

भारतीय सर्वेक्षण विभाग
पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आंकड़ा केंद्र
लखनऊ

निदेशक
Director

संदेश

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक ऑकड़ा केन्द्र लखनऊ द्वारा वार्षिक राजभाषा पत्रिका भू-दर्पण का यह अंक-3 आपके समक्ष रखते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

मै पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं के लेखकों को धन्यवाद देना चाहता हूॅ, जिनके सहयोग से पत्रिका का प्रकाशन संभव हुआ है। इसके अतिरिक्त मैं अन्य सभी व्यक्तियों को भी धन्यवाद देता हूॅ जिनके परोक्ष या अपरोक्ष रूप से सहयोग के कारण पत्रिका का प्रकाशन संभव हो सका।

मै पत्रिका का सफल एवं उज्जवल भविष्य की कामना करता हूॅ। पत्रिका को अधिक सार्थक एवं प्रभावशाली बनाने के लिये आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

(राजन कुमार निगम)

निदेशक

पूर्वी उत्तर प्रदेश भू-स्थानिक आँकड़ा केन्द्र, लखनऊ

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	विवरणी	पृष्ठ सं.
1	भारतीय सर्वेक्षण विभाग	5
2	राष्ट्रीय मानचित्रण नीति – 2005	6
3	भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कार्य	7–8
4	हिन्दी भाषा का प्रयोग- एक विवेचन	9–11
5	रिटायरमेंट से बहुत डरता हूँ	12–14
6	ये कविता उन लड़कों को समर्पित जो अपने होमटाउन...	15
7	हिन्दुस्तान की रानी कहती है	16
8	धीरे चलो बिजली खड़ी	17
9	राम राज्य में अपना क्या होगा	18
10	जार्च पंचम की नाक	19–21
11	जाने अपने देश के कानून को	22
12	पाँच रोचक जीवनोपयोगी तथ्य	23
13	सुविचार	24–28
14	खो जाओ इनमें	29
15	हिन्दी है वरदान	30
16	लघु कथा	31–33
17	समय बड़ा बलवान	34
18	पथ की चिंता क्या ?	35
19	आवश्यक जानकारी	36
20	मानचित्र विक्रय केन्द्र	37–43
21	सेवानिवृत्ति पर विदाई समारोह	44
22	कार्यालय में स्वच्छता अभियान	45
23	हिन्दी कार्यशाला एवं अन्य कार्यकलाप	46
24	मानचित्र	47–52

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

भारतीय सर्वेक्षण विभाग विज्ञान और प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अधीन हमारे देश का राष्ट्रीय सर्वेक्षण और मानचित्रण संगठन है। यह भारत सरकार का सबसे पुराना वैज्ञानिक विभाग है। इसकी स्थापना सन् 1767 में हुई थी।

इस विभाग के अधिकारी और कर्मचारी दुर्गम स्थानों में अनुगमन व निर्माण कार्य करने के लिये अन्यों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्हें गहन वनों, मरूस्थलों, दलदल, सुदूर भू-भागों तथा निम्नतम तटीय कटिबन्धों में जाना पड़ता है और उच्चतम हिमाच्छादित पर्वतों पर चढ़ना पड़ता है। वास्तव में वे पहले व्यक्ति हैं जो अक्षत और गैर-आबाद क्षेत्रों में पहुँचते हैं। वहां वे निरन्तर निष्ठापूर्वक और सतर्क रहकर कठिन परिश्रम से मानचित्र तैयार करते हैं जो कि विकास, प्रतिरक्षा और प्रशासन के लिये परमावश्यक हैं। इस प्रक्रम में वे देश के हर कोने और उसके भीतरी भागों से परिचित होते हैं और भारत की मिट्टी, धूल और जनसाधारण से मिल जाते हैं। वे वास्तव में अपने उद्देश्य 'आ सेतु हिमाचलम्' जिसका अर्थ है 'कन्याकुमारी अंतरीप से हिमालय तक' के अनुसार आचरण करते हैं।

SURVEY OF INDIA

The Survey of India is the national survey and mapping organization of our country, under the Ministry of Science and Technology, and is the oldest scientific department of the Government of India. It was set up in 1767.

Its Officers and staff have to pioneer untrodden lands for others to follow and build upon. They have to go to the deepest forests, deserts and swamps, to the remotest corners of the land, to the lowest coastal belts and the highest snowy mountains.

राष्ट्रीय मानचित्रण नीति – 2005

केन्द्र सरकार ने 19 मई, 2005 को एक उदारवादी राष्ट्रीय मानचित्रण नीति (एन.एम.पी.) घोषित की। एन.एम.पी. के कार्यान्वयन के लिए विस्तृत दिशानिर्देश जारी करने के लिए एन.एम.पी. दस्तावेज भारतीय सर्वेक्षण विभाग को प्राधिकृत करता है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि इस नीति की प्रगति में राष्ट्रीय सुरक्षा उद्देश्य पूर्णतः अभिरक्षित है। अतः यह निर्णय लिया गया है कि मानचित्रों की दो श्रृंखला होंगी।

1) रक्षा श्रृंखला मानचित्र– ये विभिन्न पैमानों पर परिशुद्धता को कम किये बिना ऊँचाई, समोच्च रेखाएँ और पूर्ण अर्न्तवस्तु सहित स्थलाकृतिक मानचित्र (एवरेस्ट/डब्ल्यू.जी.एस 84 आधार और बहुशंकुक/एल0सी0सी0 प्रक्षेप पर) होंगे। ये मानचित्र मुख्यतः रक्षा सेनाओं और राष्ट्रीय सुरक्षा की आवश्यकताओं की पूर्ति करेंगे और इनके उपयोग के सम्बन्ध में रक्षा मंत्रालय द्वारा दिशा निर्देश तैयार किये जायेंगे।

2) ओपन श्रृंखला मानचित्र– ओपन श्रृंखला मानचित्र मुख्यतः देश में विकास कार्यकलापों में सहायता देने के लिए प्रकाशित किए जायेंगे। इन मानचित्रों की शीट संख्या अलग होगी और ये डब्ल्यू.जी.एस. 84 आधार पर तथा यू.टी.एम. प्रक्षेप में उपलब्ध होंगे। ये मानचित्र अप्रतिबन्धित होंगे।

NATIONAL MAP POLICY – 2005

The Central Govt. announced the National Map Policy on 19th May 2005. The NMP document authorizes Survey of India to issue detailed guidelines on the implementation of the NMP. To ensure that in the furtherance of this policy, national security objectives are fully safeguarded, it has been decided that there will be two Series of Maps-

i) **Defence Series Maps (DSMs)** :- These will be the Topograaphical maps (on Everest/ WGS 84 Datum and Polyconic/LCC Projection) on various scales (with heights, contours and full content without dilution of accuracy). These maps will mainly cater for defence and national security requirements and the guidelines regarding their use will be formulated by the Ministry of Defence.

ii) **Open Series Maps (OSMs)** :- OSMs will be brought out primarily for supporting development activities in the country. OSMs shall bear different map sheet numbers and will be available in UTM projection on WGS 84 Datum. These maps will be un-restricted.

भारतीय सर्वेक्षण विभाग के कार्य

भारतीय सर्वेक्षण विभाग सर्वेक्षण विषयक सभी मामलों अर्थात ज्योडेसी, फोटोग्राममिति, मानिचित्रण और मानचित्र पुनरूत्पादन पर भारत सरकार के सलाहकार के रूप में कार्य करता है। तथापि, भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मुख्य कर्तव्य और उत्तरदायित्व नीचे बताये गये हैं :-

क) सम्पूर्ण भूगणितीय नियंत्रण (क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर) और भूगणितीय सर्वेक्षण (स्वेज से सिंगापुर तक के क्षेत्र में हिन्द महासागर, अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के 40 पत्तनों की ज्वार-भाटा भविष्यवाणी सहित) तथा संबद्ध भूभौतिकीय सर्वेक्षण।

ख) भारत में सम्पूर्ण स्थालाकृतिक नियंत्रण, सर्वेक्षण और मानचित्रण।

ग) भौगोलिक मानचित्रों और वैमानिक चार्टो का मानचित्रण और उत्पादन।

घ) विकास परियोजनाओं के लिये सर्वेक्षण।

ड) वनों, छावनियों, वृहत पैमाने पर नगर सर्वेक्षण और परिदर्शी (गाइड) मानचित्रों आदि के लिये सर्वेक्षण।

च) विशिष्ट मानचित्रों का सर्वेक्षण और मानचित्रण, उदाहरणार्थ : नदी तट क्षेत्र तथा भारत सरकार द्वारा प्राधिकृत भौगोलिक अन्वेषण।

छ) भौगोलिक नामों की वर्तनी।

ज) भारत गणराज्य की बाह्य सीमाओं का सीमांकन, देश में प्रकाशित मानचित्रों पर उनका चित्रण और अन्तर्राज्य सीमाओं के सीमांकन पर भी परामर्श देना।

झ) विभाग के लिये अपेक्षित अधिकारियों और कर्मचारियों, केन्द्रीय सरकार के विभागों तथा राज्यों के प्रशिक्षणार्थियों और भारत सरकार द्वारा प्रायोजित विदेशी प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण देना।

ञ) मानचित्रकला, मुद्रण, ज्योडेसी, फोटोग्राममिति तथा स्थालाकृतिक सर्वेक्षण में अनुसंधान और विकास तथा स्वदेशीकरण।

ट) सारे देश में वायु फोटोग्राफी-व्यवस्था उपलब्ध कराने में समन्वय और नियंत्रण।

उपर्युक्त उत्तरदायित्वों के अतिरिक्त भारतीय सर्वेक्षण विभाग सभी प्रकार के सर्वेक्षण और मानचित्रण से सम्बन्धित विषयों पर भारत सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों तथा अन्य संगठनों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप व्यवहारिक रूप से परामर्श और सूचना देने का कार्य करता है।

WHAT IT DOES

The Survey of India acts as adviser to the Government of India on all survey matters, viz geodesy, photogrammetry, mapping and map reproduction. However, the main duties and responsibilities of the Survey of India are enumerated below –

a) All geodetic control (horizontal and vertical) and geodetic surveys (including tide predictions for 40 ports in Indian Ocean, Arabian Sea and Bay of Bengal, in the region from Suez to Singapore) and allied geophysical surveys.

b) All topographical control, surveys and mapping within India.

c) Mapping and production of geographical maps and aeronautical charts.

d) Surveys for development projects.

e) Survey of forests, cantonments, large scale city surveys, Guide maps etc.

f) Survey and mapping of special maps e.g. riverain areas and geographical explorations authorized by the Government of India.

g) Spellings of geographical names.

h) Demarcation of the external boundaries of the Republic of India, their depiction on maps published in the country and also advice on the demarcation of interstate boundaries.

i) Training of officers and staff required for the department, trainees, from Central Government Departments and States and trainees from foreign countries as are sponsored by the Government of India.

j) Research and Development in cartography, printing, geodesy photogrammetry, topographical surveys and indigenization.

k) Co-ordination and control in providing aerial photographic cover over the whole of the country.

In addition to the above responsibilities, the Survey of India renders advice and information on all kinds of surveys and cartographic matters practically to all the Ministries and Departments of the Government of India as well as other organizations requiring their services.

हिन्दी भाषा का प्रयोग- एक विवेचन

राजेश कुमार,
अधिकारी सर्वेक्षक

राजभाषा हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के लिये किए जाने वाले अनेकानेक सरकारी प्रयासों/कार्यक्रमों के बावजूद अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पाने के पीछे हमारे भारतीय समाज में अपनी भाषा के प्रयोग में हीन भावना का एहसास होना एक सबसे बडा कारक है। विशेष रूप से हिंदी भाषी क्षेत्रों में यह भावना प्रवल दिखायी देती है। यात्रा के दौरान, विद्यालय में कार्यक्रमों के दौरान या आम बोल-चाल में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करके हम अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं तथा आने वाली पीढी के नौनिहालों के मन-मस्तिष्क में यह भाव पैदा करने का महापाप किया जा रहा है कि अंग्रेजी के बिना जीवन में कुछ कर पाना संभव नहीं है। यह माना जा सकता है कि जिन विषयों/क्षेत्रों में अध्ययन सामग्री अभी तक अंग्रेजी या किसी अन्य विदेशी भाषा में ही उपलब्ध है तो उसका अध्ययन किया जाना चाहिए परन्तु जीवन के हर क्षेत्र में एक विदेशी भाषा को ही सारी प्रगति का मूलाधार मानकर अपनी भाषा का तिरस्कार सर्वथा अनुचित है और हमें ऐसी अवस्था से बाहर निकलकर अपनी भावी पीढी का मार्गदर्शन करना होगा । विदेशी भाषा के प्रति हम भारतीय किस तरह का भाव व अपनी भाषा के प्रति तिरस्कार का भाव रखते हैय इसका आभास मेरे साथ घटी निम्नवत् वर्णित घटना से स्पष्ट हो जाएगा-

''बात वर्ष 2013 की है, जब मैं मेडिकल प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिए वाराणसी के एक संस्थान में अध्ययनरत अपनी पुत्री की फीस जमा करने गया। संस्थान में निदेशक बच्चों को पढा रहे थे, अतय मुझे वहाँ तैनात चौकीदार ने कार्यालय में बैठने को कहा। जब मैं कार्यालय में पहुचा तो देखा कि पूर्व में ही वहाँ एक व्यक्ति बैठा है। उस अजनबी व्यक्ति से मेरी जो वार्ता हुयी, उस पर गौर किया जाय-

मैं- महोदय आप अभिवावक हैं या शिक्षक ?

अजनबी- आई एम गार्जियन (I am guardian)

मैं- महोदय, आप किस जनपद के निवासी है ?

अजनबी- आई विलोंग टू मुगलसराय आफ चंदौली डिस्ट्रिक्ट (I belong to Mughalsarai of Chandauli District)

मैं- महोदय, आपका पुत्र या पुत्री या कोई और संबंधी इस संस्थान में पढ़ रहा है ?

अजनबी- माई डाटर स्टडीज हियर (My daughter studies here)

मैं- महोदय, क्या आपकी पुत्री हिंदी माध्यम से पढ़ाई कर रही है ?

अजनबी- नो, नो, नो क्वेश्चन ऐट आल (No, no, no question at all) शी इज कान्वेंट एजुकेटेड (She is convent educated)

मैं- महोदय, आपकी बच्ची ने किस विद्यालय से पढ़ाई की है?

अजनबी- शी पास्ड हर आई. एस. सी. फ्राम सेंट जोसेफ स्कूल (She passed her I.Sc. from St. Joseph School)

मैं– भाई साहब, आपका व्यवसाय क्या है?

अजनबी– आई एम गवर्नमेंट सर्वेंट (I am Govt. Servant)

मैं– आप केंद्र सरकार के आधीन कार्यरत है या राजय सरकार के?

अजनबी– आई वर्क इन यू.पी. गवर्नमेंट डिपार्टमेंट (I work in U.P. Govt. Deptt.)

मैं– उ0 प्र0 राज्य सरकार के किस विभाग में काम करते है?

अजनबी– आई वर्क इन हेल्थ डिपार्टमेंट (I work in Health Dept.)

उपरोक्त संवाद के बाद मैं चुप हो गया और हमने मान लिया कि उस अजनबी से हिंदी का एक शब्द भी नहीं बोलवाया जा सकता। मेरी कुछ मिनट की चुप्पी के बाद वह अजनबी मुस्कुराया और फिर मुझसे प्रश्न करने लगा और मैं उत्तर देने लगा जरा नए संवाद पर गौर करें–

अजनबी– इज योर सन आर डाटर प्रिपेयरिंग फार मेडिकल (Is your son or daughter preparing for medical.)?

मैं– जी मेरी पुत्री तैयारी कर रही है।

अजनबी– इज शी कान्वेंट एजुकेटेड (Is she convent educated.)?

मैं– जी नहीं, वह हिंदी माध्यम के विद्यालय से पढ़ाई की है।

अजनबी– डू यू नो देयर इज नो स्कोप फार हिंदी मीडियम स्टूडेंट्स इन दिस फील्ड (Do you know, there is no scope for Hindi medium students in this field.)?

मैं– श्रीमान जी, यह आपकी गलत फहमी है। विज्ञान के मूल भूत सिद्धांतों पर पकड अच्छी हो तो किसी भी माध्यम से सफलता पायी जा सकती है। वैसे भी आपको हिंदी माध्यम से पढ़ाई कर रहे बच्चे या अभिभावक के मनोबल को गिराने वाली बात नहीं करनी चाहिए।

अजनबी– यू आर अनेबल टू अंडरस्टैंड द इसू। यू डोन्ट नो द कंपटीशन (You are unable to understand the issue. You don't know the competition.)?

मैं– श्रीमान जी, बिना पूरी जानकारी रखे किसी व्यक्ति के बारें में ऐसी टिप्पणी नहीं करनी चाहिए। कृपया नोट करें कि कोई भी युद्ध सिर्फ हथियारों से नहीं जीता जाता। पैटन टैंक को तोडने के लिए वीर अब्दुल हमीद जैसी हिम्मत चाहिए। कोई भी विद्यार्थी किसी प्रतिस्पर्धा में सफल हो सकता है बशर्ते उसके इरादे मजबूत हो और विषय पर पकड़ हो।

अजनबी– इट्स यूजलेस टू डिस्कस इट। (It's useless to discuss it.)

इस संवाद के बाद मैं चुप हो गया तथा मेरी चुप्पी पर अजनबी विजयी मुद्रा में मुस्करा रहा था। कुछ ही क्षण बाद संस्थान के निदेशक महोदय आ गए तथा अभिवादन के बाद कुर्सी पर बैठते हुए उन्होंने अजनबी को मेरे बारे में बताया कि यह वही व्यक्ति हैं, जिनसे मिलने के लिए आप लंबे समय से इंतजार कर रहें है। मैं स्तब्ध था कि निदेशक महोदय क्या कह रहे है। जब

तक मैं कुछ समझ पाता तब तक अजनबी मेरे पैर छूने को आगे बढा और मॉफी मागने लगा। मैंने उससे कहा कि मित्र, इंसान चाहे जितनी भाषाये सीख ले, चाहे जितने देश घूम ले परंतु अपनी भाषा, अपनी पहचान, अपनी संस्कृति से जुडे रहना ही उसके लिए श्रेयस्कर है।

चूँकि सरकारी मेडिकल कालेज से पढाई कर रहीं मेरी दो बडी पुत्रियों (डा. निरूपमा यादव, एम.बी.बी.एस, एम.एस. एवं डा. अंजलि यादव, एम.बी.बी.एस, एम.एस.) के बारे में निदेशक ने उस अजनबी को बता रखा था और सलाह दिया था कि वह मुझसे मिलकर अपनी बच्ची के लिए सलाह ले ले। निदेशक के समक्ष ही अजनबी ने बार-बार क्षमा याचना करते हुए मेरे घर पर अपनी पुत्री के साथ मिलने का समय मंगा मैंने उसे सादर अपने घर आने का न्योता दिया परन्तु आग्रह किया कि आप कि जैसे अंग्रेजी के ज्ञाता को मेरे घर पर समस्या होगी क्योंकि मेरे घर में भोजपुरी व हिंदी के अलावा दूसरी भाषा नहीं बोली जाती।

उस वर्ष मेडिकल प्रवेश परीक्षा का परिणाम आया और मेरी तीसरी पुत्री भी एम.बी.बी.एस में प्रवेश के लिए चुन ली गयी। मेरे आवास पर आयोजित मिष्ठान-दावत में उस अजनबी व्यक्ति को आमंत्रित किया गया था तथा वह सपरिवार उसमें शामिल भी हुए परंतु इस बार उनकी बोल-चाल की भाषा में अंग्रेजी की न्यूनता थी तथा चेहरे पर पश्चाताप के चिह्न थे। वह यह तथ्य जानकर भी अचंभित थे कि मेरी सभी पुत्रिया अंग्रेजी विषय में भी विशेष योग्यता रखती हैं। विदा होते समय मैंने उन्हें गले से लगाया और सब कुछ भूल जाने को कहा।

इस घटना के वर्णन के पीछे मेरा एक महत्वपूर्ण आशय यह है कि मैं अपने उन भाई-बंधुओं/बहनों/माताओं/अभिभावकों को यह बता सकूँ कि अंग्रेजी के पीछे मत भागिए, किसी बड़े नामी गिरामी स्कूल में अपने बच्चें को न भेज पाने की टीस खत्म करें। बच्चों को मजबूत संस्कार दें। उन्हें चरित्रवान बनाएँ। अपनी भाषा और संस्कृति पर गर्व करना सिखाये। किसी भी विषय के मूल-भूत सिद्धांतों पर पकड़ बनाएं, सफलता उनके कदम चूमेगी।

सारा जगत स्वतंत्रता के लिए लालायित रहता है फिर भी प्रत्येक जीव अपने बंधनों से प्यार करता है

– श्री अरबिंदो

शिक्षा सबसे सशक्त हथियार है जिससे दुनिया को बदला जा सकता है *– नेल्सन मंडेला*

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता *– चाणक्य*

मैं रिटायरमेंट से बहुत डरता हूँ

बी0जी0राम,
अधिकारी सर्वेक्षक

रिटायरमेंट यानि कि सेवानिवृत्ति प्रत्येक अधिकारियों व कर्मचारियों के जिंदगी में एक मिश्रितभाव (सुख-दुख) लेकर आता है। विगत वर्षों में सेवानिवृत्त हुए सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को यह कविता समर्पित है -

मैं रिटायरमेंट से बहुत डरता हूँ
उस दिन समारोह होंगे,
उपहार दिए जायेंगे,
दुश्मन भी मुस्कराकर स्वागत करेंगे,
भाषणों में बखान होगा
मेरी योग्यता और योगदान का,
मेरे गुण, जो हैं या नहीं हैं,
चुन चुन कर गिनायें जायेंगे,
खुद को पहचानना भी मुश्किल होगा,
कन्नी काट कर निकलने वाले भी
रूवांसे हो जायेंगे।
बहुत कुछ वैसा ही होगा,
जैसा मौत पर होता है।
पर अगले दिन से
बदल जायेगी दुनिया,
ना किसी का फोन आएगा,
न किसी से बात होगी,
मिलने पर भी लोग
बेगानों जैसे पेश आयेंगे।
मैं रिटायरमेंट से बहुत डरता हूँ,
इतना तो मौत से भी नही डरता,
मौत के बाद कुछ दिन ही सही
लोग याद तो रखते है।
मैं रिटायरमेंट से बहुत डरता हूँ,

वर्ष 2016 एवं 2017 में पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. से सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों/कर्मचारियों का संक्षिप्त परिचय

सेवानिवृत्ति प्रत्येक सरकारी कर्मचारी के जीवन का वह अवसर है जिस पर कर्मचारी को जितनी ज्यादा खुशी होती है

उससे कहीं ज्यादा दुख भी होता है। दुख इस बात का कि वो अपने उन साथियों से दूर हो जायेगा जो उसके दुख-सुख के हमेशा भागीदार रहें। पिछलें दिनों सोशल मीडिया पर एक बैंक के उच्च अधिकारी की सेवानिवृत्ति के अवसर का वीडियों बहुत वायरल हुआ जिसमें वो अधिकारी सेवानिवृत्ति के दौरान दे रहे अपने भाषण में इतने भावुक हो गये कि उनके आखों से आसू निकलने लगे तथा उन्हें हार्ट अटैक आ गया जिससे उनकी वहीं मृत्यु हो गई। इससे यह पता चलता है कि उनका अपने साथियों से इतना लगाव था कि वो एक छण भी उन लोगों के बिना नहीं रह सकतें थे और शायद नियति को भी यही मंजूर था। अपने कार्यालय में भी कई वर्षो पहले इसी प्रकार की एक घटना हुई थी। इस केन्द्र के श्री उमाशंकर सिंह, अधिकारी सर्वेक्षक द्वारा अपने एक साथी के सेवानिवृत्ति के अवसर पर भाषण देते समय इतने भावुक हो गए कि अचानक गश खाकर गिर गये। उन्हें तत्काल मेयो अस्पताल, लखनऊ में भर्ती कराया गया। जहाँ एक-दो दिन के उपचार के उपरान्त ही वो सामान्य हो पाए थे। शायद हर कर्मचारी जो सेवानिवृत्त होता है इन चीजों का सामना करता है। हमें भी एक दिन इसी पल से गुजरना है जब हमारे पास अपने परिवार के लिए तो पर्याप्त समय होगा लेकिन वो परिवार जो हमारे लिए बहुत मायने रखता है शायद पीछे छूट जायेगा।

वर्ष 2016 एवं 2017 में पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. से सेवानिवृत्त हुए अधिकारियों/कर्मचारियों का संक्षिप्त परिचय निम्नवत है -

रामाधार गिरी, खलासी

श्री रामाधार गिरी भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 1976-04-24 को 91 पार्टी लखनऊ में नियुक्त हुए। दिनांक 1994-01-01 को खलासी के पद पर नियमित हुए तथा दिनांक 2016-01-31 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए।

शेर बहादुर सिंह, सर्वेक्षण सहायक

श्री शेर बहादुर सिंह भारतीय सर्वेक्षण विभाग में ग्रुप डी पद पर दिनांक 1977-12-19 को 81 पार्टी शिलांग में नियुक्त हुए। दिनांक 1995-01-01 को ग्रुप सी (टी.टी.टी.बी) में प्रोन्नत हुए। दिनांक 2001-03-23 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यहीं पर दिनांक 2012-01-02 को सर्वेक्षण सहायक के पद पर प्रोन्नत हुए एवं दिनांक 2016-06-30 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए।

ननकउ, खलासी

श्री ननकउ भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 1978-10-25 को 4 पार्टी अजमेर में नियुक्त हुए। दिनांक 1989-02-01 को खलासी के पद पर नियमित हुए तथा 2004-05-31 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आयें तथा यहीं दिनांक 2016-06-30 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए।

रामशंकर, सर्वेक्षण सहायक

श्री रामशंकर भारतीय सर्वेक्षण विभाग में टी.टी.टी.बी के पद पर दिनांक 1984-06-01 को 90 पार्टी देहरादून में नियुक्त हुए। दिनांक 2004-05-31 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आयें तथा यहीं दिनांक 2017-11-12 को सर्वेक्षण सहायक के पद पर प्रोन्नत हुए एवं इसी पद से दिनांक 2016-09-30 को सेवानिवृत्त हुए।

राम तेज, खलासी

श्री राम तेज, भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 1980-10-12 को 3 पार्टी अम्बाला में

नियुक्त हुए। दिनांक 1989-03-03 को खलासी के पद पर नियमित हुए तथा 2006-07-31 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आयें तथा यहीं दिनांक 2016-09-30 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए।

राम हौसिंला पाण्डें, खलासी

श्री राम हौसिंला पाण्डें भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 1974-11-27 को 70 पार्टी देहरादून में नियुक्त हुए। दिनांक 1989-01-01 को खलासी के पद पर नियमित हुए तथा 2004-06-09 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आयें तथा यहीं दिनांक 2016-11-30 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए।

अमर नाथ, खलासी

श्री अमर नाथ भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 1979-05-04 को 70 पार्टी देहरादून में नियुक्त हुए। दिनांक 1980-06-01 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा दिनांक 1989-03-01 को खलासी के पद पर नियमित हुए तथा यहीं दिनांक 2016-11-30 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए।

राम बहादुर, खलासी

श्री राम बहादुर भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 1979-04-05 को 4 पार्टी अजमेर में नियुक्त हुए। दिनांक 1989-02-01 को खलासी के पद पर नियमित हुए तथा दिनांक 1990-11-12 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आयें तथा यहीं दिनांक 2017-01-31 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए।

शिव बहादुर सिंह, खलासी

श्री शिव बहादुर सिंह भारतीय सर्वेक्षण विभाग में ग्रुप डी के पद पर दिनांक 1977-12-12 को 7 पार्टी माउन्ट आबू में नियुक्त हुए। दिनांक 1998-01-01 को ग्रुप सी (टी.टी.टी.बी) में प्रोन्नत हुए। दिनांक 2000-10-24 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आयें तथा यहीं पर दिनांक 2012-01-02 को सर्वेक्षण सहायक के पद पर प्रोन्नत हुए एवं दिनांक 2017-12-31 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए।

रामशंकर, खलासी

श्री रामशंकर भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सम्भाव्य खलासी के पद पर दिनांक 1983-11-08 को 55 पार्टी चण्डीगढ में नियुक्त हुए। दिनांक 1995-05-18 को खलासी के पद पर नियमित हुए तथा 2004-05-31 को पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी., लखनऊ में स्थानान्तरण पर आये तथा यहीं दिनांक 2017-12-31 को इसी पद से सेवानिवृत्त हुए।

वर्ष 2016 एवं 2017 में पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. से सेवानिवृत्त हुए उपरोक्त अधिकारियों/कर्मचारियों का भारतीय सर्वेक्षण विभाग में कार्य बहुत ही अच्छा रहा तथा विभाग द्वारा आबंटित कार्य का निष्पादन इन्होंने समय से तथा बडे उत्साह से किया। ये लोग अपने सेवा काल में हमेशा विभाग के प्रति समर्पित रहे तथा इसके लिए इन लोगों की जितनी सराहना की जाये वो कम है। पूर्वी उत्तर प्रदेश जी.डी.सी. इन लोगों का हमेशा आभारी रहेगा कि इन लोगों ने अपने सेवा काल का एक लम्बा समय यहाँ व्यतीत किया तथा सरकारी कार्य को सुचारू रूप से करने में कार्यालय/विभाग का सहयोग किया।

ये कविता उन लड़कों को समर्पित जो अपने होमटाउन से बाहर नौकरी पर तैनात है

राहुल ठाकरान

बेटे डोली में विदा नही होते,
और बात है मगर
उनके नाम का ''ज्वाइनिंग लेटर''
आँगन छूटने का पैगाम लाता है!
जाने की तारीखों के नज़दीक आते आते
मन बेटे का चुपचान रोता है
अपने कमरे की दीवारें देख देख
घर की आखरी रात नही सोता है,
होश संभालते संभालते
घर की जिम्मेदारियां संभालने लगता है
विदाई की सोच में बैचेनियों
का समंदर हिलोरता है
शहर, गलियाँ, घर छूटने का दर्द समेटे
सूटकेस में किताबें और कपड़े सहेजता है
जिस आँगन में पला बढ़ा, आज उसके छूटने पर
सीना चाक चाक फटता है
अपनी बाइक, बैट, कमरे के अजीज पोस्टर
छोड़ आँसू छिपाता मुस्कुराता निकलता है.......
अब नही सजती गेट पर दोस्तों की गुलज़ार महफिल
ना कोई बाइक का तेज़ हॉर्न बजाता है
बेपरवाही का इल्ज़ाम किसी पर नहीं अब
झिड़कियाँ सुनता देर तक कोई नही सोता है
वीरान कर गया घर का कोना कोना
जाते हुए बेटी सा सीने से नही लगता है
ट्रेन के दरवाजे में पनीली आंखों से मुस्कुराता है
दोस्तों की टोली को हाथ हिलाता
अलगाव का दर्द जब्त करता, खुद बोझिल सा लगता है
बेटे डोली में विदा नही होते ये और बात है.......
फिक्र करता माँ की मगर
बताना नही आता है
कर देता है ''आन लाइन'' घर के काम दूसरे शहरों से
और जताना नही आता है
दोस्तों को घर आते जाते रहने की हिदायत देते
संजीदगी से ख्याल रख ''मान'' नहीं मांगता है
बड़ी से बड़ी मुश्किल छिपाना आता है
माँ से फोन पर पिता की खबर पूछते
और पिता के कुछ पूछना
सूझ नही पाता है
लापरवाह, बेतरतीब लगते है बेटे
मजबूरियों में बंधे
दूर रहकर भी जिम्मेदारियां निभाना आता है
पहुँच कर अजनबी शहर में जरूरतों के पीछे
दिल बच्चा बना माँ के
आँचल में बाँध जाता है
ये बात और है बेटे डोली में विदा नहीं होते मगर......

हिन्दुस्तान की रानी कहती है

शिव पुजारी,
(एम.टी.एस.)

मेरा नाम है बेइमानी – मै हूँ हिन्दुस्तान की रानी –
मेरा डसा ना मांगे पानी – कसम भगवान की।।

मुझसे हारे अन्ना हजारे– बदले दूसर बाट बेचारे–
हारे रामदेव बेचारे – कसम भगवान की।। मेरा नाम0–।।

1. मंहगाई मेरी मम्मी है – बाप का नाम घोटाला।
भष्ट्राचार बड़ा भाई – छोटा भाई हवाला।
''रबकी है मुझपे मेहरबानी –

चार सौ बीस हैं बेटे दोनों और है बिटिया रानी।
जिसने मेरी महिमा जानी–बन गया राजा हिन्दुस्तानी।
''जूता पहने ऊ जापानी।। कसम भगवान की।।मेरा नाम0–।।

2. सुविधा शुल्क हैं ससुर हमारे – सासू मेरी दलाली।
जनपद कोट कचहरी थाना चाहे हो कोतवाली।
।।कोई जगह ना मुझसे है खाली।।

चाहे हो झांसी की रानी – चाहे दुर्गा भवानी।
मेरा कोई नहीं है शानी – ऐसी मेरी कीर्ति बखानी
'' किस्मत खुली रहेगी मेरे खान दानी की ''।।मेरा नाम0–।।

3. संत्री से मंत्री तक लेकर भइया पहुंच हमारी
विक्रेता – क्रेता – अभिनेता सब है चरणपुजारी
।। ऐसी मेरी महिमा बखानी–।।

सौंपी शहर–गाँव बेइमानी –तुम्हूं ले लो खर्चा पानी
इज्जत बनी रहेगी –सारे खान दान की।।

मेरा नाम है बेइमानी – मै हूँ हिन्दुस्तान की रानी –
मेरा डसा ना मांगे पानी – कसम भगवान की।।

मुझसे हारे अन्ना हजारे– बदले दूसर बाट बेचारे–
हारे रामदेव बेचारे – कसम भगवान की।। मेरा नाम0–।।

धीरे चलो बिजली खड़ी

धर्मराज यादव,
सर्वेक्षण सहायक

गरमियों के दिनों में कामोवेश अपराध कम होते है जघन्य अपराधों को छोड़कर अब कड़ी धूप में कौन राहजनी करे, चिलचिलाती धूप में लड़कियाँ नहीं छेडी जाती इधर एण्टीरोमियों अभियान से शेक्सपियर साहब धुन्ध है प्रचंड आंधी में पतंग नहीं उड़ पाती चोरी डकैती के लिये भी मौसम को सामान्य होना चाहिये शांती व्यवस्था बनी रहे तो पुलिस भी निठल्ली हो जाती है। गर्मियों में बिजली की कटौती के प्राकृतिक कारण होते है। वैसे जो बिजली मोह माया है मन बड़ा चंचल हो उसका घंटों में नहीं आयेगी और आसमान से गिरती तो तबाह कर देती। अंधेरे में एक दिन बिजली से पूंछा तू रोज क्यूं नहीं आती है वह बोली अजी कद्र खो देता है रोज का आना वाकई बिजली कुछ देर ठहरती है जो करंट मारने लगता है। पंखे कूलर ए.सी. सब इसके आशिक है माशूका हो तो ऐसी बिजली को राजभवन और विधायक निवास के प्रिय है अस्पताल में ऑपरेशन के वक्त ऑपरेशन थियेटर में रहना इसे प्रसन्द नहीं यह तो छलना है। प्रेमिकाओं ने ऐन वक्त पर दगा देना बिजली से ही तो सीखा है। बिजली नहीं आती पर इन्तजार का मीटर चलता रहता है बिजली दगाबाज हो तो इस पर शक होने लगता है। भारतीय घड़ियों में शक की सुई नहीं होती कटियां फंसा कर बिजली की चोरी करना एक हुनर है। इसके लिए कोई सीढ़ी की जरूरत नहीं होती सिर्फ एक लंगड़ फेंकना पड़ता है। थोड़ा हट कर देखे तो यू0पी0 में इधर–उधर मृदुल कोलाहल है तो उधर यादव परिवार सत्ता में नहीं रहा लेकिन बिजली से कह दिया गया कि तुम अपना करेक्टर नहीं सुधारा तो तुम्हारा मीटर उखाड़ दिया जायेगा कल मैने एक यू.पी. वाले भैया से पूछा तुम लोग ये जो कर रहे हो उसके लिये क्या केन्द्र सरकार से अनुमति ले ली है वह बोला कौन केन्द्र सरकार मैंने कहा– दिल्ली वाली, वह बोला –कौन दिल्ली, मैंने कहा– प्रधान मंत्री वाली, वह बोला– कौन प्रधान मंत्री मैने कहा– मोदी जी, वह बोला– कौन मोदी जी लंगड मैनें फसाई है मेरी तो बिजली गुल हो गयी।

संस्कृत में धन को द्रव्य कहा जाता है अर्थात बहने वाला। यदि वह स्थित रहा तो रूके हुए पानी की तरह उसमें बदबू आने लगेगी – *विनोबा भावे*

अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लोगों का भी दिल जीता जा सकता है – *भगवान बुद्ध*

राम राज्य में अपना क्या होगा

मदन पाल,
सर्वेक्षण सहायक

मित्रों मेरे लिये व्यंग्य लिखना मुश्किल हो रहा है स्थितियाँ व्यंग्य के अनुकूल नहीं रही सड़कों पर भूतपूर्व मनचले लड़कियों से राखी बँधवा रहे है। थानों में नम्र और विनय शील सुदामा बैठे है। कत्लगाहें नहीं रही जानवर आजादी से धूम रहे है बकरों की अम्मा रात दिन खैर मना रही हैं। बच्चे कुंठित है उनकी कुछ छुट्टियों रद्द कर दी गयी है। भ्रष्टाचारी अब सदाचार का कुर्ता पजामा पहन रहे है। महिलायें जेवर पहने रात-रात भर यहां वहां आ जा रही है। कोई कुछ पूंछ नहीं रहा है लड़कियाँ अपनी स्कूटी पर बैठकर रात नौ बजे का शो देखने सिनेमा हाल जा रही है। कोई देखने ताकने वाला नहीं। चाहकर भी दुराचार नहीं हो पा रहा। मित्रों व्यंग्यकारों के लिये ऐसी मौत से तो जिन्दगी भली। अब क्या खायें और क्या कमाये।

अब तो हाल यह है कि जो दुराचार आपसी सहमति से किया जाय वह सदाचार कहलाने लगा है। पुरानी आदत वाले दरोगा भी अब - अबेओ उल्लू के पट्ठे, श्रीमान जी कहने लगे है। मेरे लिये तो इन अच्छे दिनों से भले तो बुरे दिन थे सोनू निगम की अपील पर लाउडस्पीकर बन्द किये जा रहे है। अब तीन बार तलाक नहीं दिया जायेगा मीठे करेले बिकने लगे है। लोगबाग पूरे-पूरे कपड़े पहनने लगे मैं कहाँ चिकोटी कांटू, किसे संभ्रांत गाली दूँ में मँग और मंसूर की दाल रातों रात भला अरहर कैसे हो जाऊँ।

अभिव्यक्ति की अजादी तो जानवरों तक को होती है। मै अपने हाथ काटकर गब्बर को दे दूँ क्या अर्थ नहीं रहेगा तो अनर्थ होगा ही अल्पसंख्यक होते व्यंग्यकारों को तो आरक्षण भी नसीब नहीं। आखिर मसवरों की जाति का क्या होगा। जिसे ताना मारेंगें वह गोरक्षक हो जायेगा हमें तो भईया गाय माता नहीं, ग्वाला ही दूघ देता है। भूखों को उपवास सें क्या मतलब पत्थर वाजों में शामिल हो जाऊँ। सैनिक, जवान उन्हें फूल दे रहे है और बदले में वे ईट मार रहें हैं।

संस्कृत में धन को द्रव्य कहा जाता है अर्थात बहने वाला। यदि वह स्थित रहा तो रूके हुए पानी की तरह उसमें बदबू आने लगेगी - *विनोबा भावे*

अच्छे शब्दों के प्रयोग से बुरे लोगों का भी दिल जीता जा सकता है - *भगवान बुद्ध*

जार्च पंचम की नाक

मदन पाल,
सर्वेक्षण सहायक

यह बात उस समय की है जब इग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ द्वितीय अपने पति के साथ पधारने वाली थी। अखबारों में उनकी चर्चा हो रही थी रोज लंदन से अखबारों में खबरें आ रही थी कि शाही दौरे के लिये कैसी-कैसी तैयारियां हो रही है रानी एलिजा बेथ का दर्जी परेशान था कि हिन्दुस्तान पाकिस्तान और नैपाल के दौरे पर रानी कब क्या पहनेगीं उनका सेक्रेटरी और शायद जासूस भी उनके पहले ही इस महादीप का तूफानी दौरा करने वाला था। आखिर कोई मजाक तो नहीं। जमाना चूँकि नया था फौज फाटे के साथ निकलने के दिन बीत चुके थे इसलिए फाटोग्राफरों की फौज तैयार हो रही थी।

इंग्लैण्ड के अखबारों की कटिंग हिन्दुस्तानी बड़ी अखबारों के दूसरे दिन चिपकी नजर आती थी कि रानी ने एक ऐसा नीले रंग का शूट बनवाया है जिसका रेशमी कपड़ा हिन्दुस्तान से मगाया गया है जिस पर करीब चार सौ पौंड खर्चा आया है , रानी एलिजावेथ की जन्म पत्री भी छपी। प्रिंस फिलिप के कारनामें छपे। और तो और उनके नौकरों बावर्चियों, खानसामों, अंगरक्षकों की पूरी की पूरी जीवनियां देखने में आयी बड़ी धूम थी बड़ा शोर शराबा था। शंख इंग्लैण्ड में बज रहा था गूंज हिन्दुस्तान में आ रही थी इन खबरों से हिन्दुस्तान में सनसनी फैल रही थी राजधानी में तहलका मचा हुआ था जो रानी पांच हजार रूपये का रेशमी शूट पहनकर पालम के हबाई अड्डे पर उतरेंगी उसके लिए कुछ तो होना चाहिये, कुछ क्या बहुत कुछ होना चाहिये। जिसके बावर्ची पहले महायुद्व में जान हथेली पर लेकर लड़ चुके है उसकी शान शौकत के क्या कहने और वही रानी दिल्ली आ रही है, नयी दिल्ली ने अपनी तरफ देखा और वेसाख्ता (स्वाभाविक रूप से) मुँह से निकल गया वह आये हमारे घर खुदा की रहमत कभी हम उनको कभी हम अपने घर को देखते है, और देखते देखते नयी दिल्ली का कायापलट होने लगा।

करिश्मा तो यह था कि किसी ने किसी से नहीं कहा किसी ने किसी को नहीं देखा पर सड़कें जवान हो गयी बुढ़ापे की धूल साफ हो गयी इमारतों ने नाजनीनों (कोमलांगी) की तरह श्रृंगार किया लेकिन एक बड़ी मुश्किल पेश थी जार्च पंचम की नाक नयी दिल्ली में सब कुछ था सब कुछ होता जा रहा था सब कुछ हो जाने की उम्मीद थी पर जार्च पंचम की नाक की बडी मुसीबत थी। नयी दिल्ली में सब कुछ था पर सिर्फ नाक नहीं थी।

इस नाक की भी एक लम्बी दस्तान है इस नाक के बड़े तहलके मचे थे किसी वक्त आन्दोलन हुये थे राजनीतिक पार्टियों ने प्रस्ताव पास किये थे। चन्दा जमा किया था कुछ नेताओं ने भाषण दिये थे गरमागरम बहसें भी हुई थी अखबारों के पन्ने रंग गये थे बहस इस बात पर थी कि जार्च पंचम की नाक रहने दी जाय या हटा दी जाय और जैसा कि हर राजनीतिक आन्दोलन में होता है, कुछ पक्ष में थे तो कुछ विपक्ष में ज्यादातर लोग खामोश थे खामोश रहने वालों की तायदाद दोनो तरफ थी। यह आन्दोलन चल रहा था। जार्च पंचम की नाक के लिये हथियार बंद पहरेदार तैनात कर दिये गये थे क्या मजाल की कोई उनकी नाक तक पहुँच जाय। हिन्दुस्तान में जगह-जगह ऐसी नाकें खडी थी, और जिन तक लोगों के हाथ पहुँच गये उन्हें शानों शौकत के साथ उतारकर अजायब घरों में पहुँचा दिया गया कहीं से शाही लाटों की नाकों के लिए गुरिल्ला युद्व होता रहा।

उसी जमाने में यही हादसा हुआ इंडिया गेट के सामने वाली जार्च पंचम की लाट की नाक एकाएक गायब हो गयी हथियार बन्द पहरेदार अपनी जगह तैनात रहे गश्त लगती रही और लाट की नाक गायब हो गयी।

रानी आए और नाक न हो एकाएक परेशानी बढ़ी। बडी शरगरमी शुरू हुई देश के खैरख्वाहों (भलाई चहने वाले) की एक

मीटिंग बुलाई गयी और मसला पेश किया गया कि क्या किया जाय, वहाँ सभी सहमत थे कि अगर यह नाक नहीं है तों हमारी भी नाक नहीं रह जायेगी उच्च स्तर पर मशवरे हुए दिमाग खरोचे गये और यह तय किया गया कि हर हालत में इस नाक का होना जरूरी है यह तय होते ही एक मूर्तिकार को हक्म दिया गया कि वह फौरन दिल्ली में हाजिर हो मूतिकार यों तो कलाकार था पर जरा पैसे से लाचार था। आते ही हुक्मरानों के चेहरे देखे अजीव परेशानी थी उन चेहरों पर कुछ लटके कुछ उदास और कुछ बदहवास थे उनकी हालत देखकर लाचार कलाकार की आंखों में आंसू आ गये तभी एक अवाज सुनाई दी मूर्तिकार जार्च पंचम की नाक लगानी है। मूर्तिकार ने सुना और जवाब दिया नाक लग जायेगी पर मुझे यह मालूम होना चाहिए कि यह लाट कब और कहां बनी थी इस लाट के लिए पत्थर कहां से लाया गया था। सब हुक्मरानों ने एक दूसरे की तरफ देखा एक ही नजर दूसरे से कहा कि यह बताने की जिम्मेदारी तुम्हारी है। खैर मामला हल हुआ। एक क्लर्क को फोन किया गया और इस बात की पूरी छानबीन करने का काम सौंपा गया पुरातत्व विभाग की फाईलों के पेट चीरे गए पर कुछ भी पता नहीं चला कर्लक ने लौटकर कमेटी के सामने काँपते हुए बयान किया''सर मेरी खता माफ हो फाईलें सब कुछ हजम कर चुकी हैं।

हुक्मरानों के चेहरे पर उदासी के बादल छा गये। एक खास कमेटी बनाई गयी और उसके जिम्में यह काम दे दिया गया कि जैसे भी हो यह काम होना है और नाक का दारोमदार आप पर है। आखिर मूर्तिकार को फिर बुलाया गया उसने मामला हल कर दिया वह बोला पत्थर की किस्म का ठीक पता नही चला तो परेशान मत होइये मै हिन्दुस्तान के हर पहाड़ पर जाऊंगा और ऐसा ही पत्थर खोज कर लाऊंगा। कमेटी के सदस्यों के जान में जान आई। सभापति ने चलते-चलते गर्व से कहा ऐसी क्या चीज है जो हिन्दुस्तान में नहीं मिलती हर चीज इस देश के गर्भ में छिपी है जरूरत खोज करने की है खोज करने के लिये मेहनत करनी होगी इस मेहनत का फल हमें मिलेगा आने वाला जमाना खुश हाल होगा। यह छोटा सा भाषण फौरन अखबार में छप गया। मूर्तिकार हिन्दुस्तान के पहाड़ी प्रदेशों और पत्थरों की खानों के दौरे पर निकल पड़ा। कुछ दिन बाद वह हताश लौटा उसके चेहरे पर लानत बरस रही थी उसने सिर लटकाकर खबर दी हिन्दुस्तान का चप्पा-चप्पा खोज डाला पर इस किस्म का पत्थर कहीं नहीं मिला यह पत्थर विदेशी है।

सभापति ने तैश में आकर कहा लानत है आप की अक्ल पर विदेशों की सारी चीजें हम अपना चुके है दिल दिमाग तौर तरीके और रहन सहन जब हिन्दुस्तान में बाल जंस तक मिल जाता है तो पत्थर क्यों नहीं मिल सकता।

मूर्तिकार चुप खड़ा था। सहसा उसकी आंखों में चमक आ गयी कहा एक बात मैं कहना चाहूँगा लेकिन इस शर्त पर कि यह बात अखबार वालों तक न पहुंचे। सभापति की आंखों में चमक आ गयी। चपरासी को हुक्म हुआ और कमरे के सब दरवाजे खिड़की बन्द कर दिये गये। तब मूर्तिकार ने कहा देश में अपने नेताओं की मूर्तियां भी है अगर इजाजत हो और आप लोग ठीक समझे तो........ मेरा मतलब है तो.......जिसकी नाक इस लाट पर ठीक बैठे उसे उतार लाया जाय। सबने सबकी तरफ देखा सबकी आंखों में एक क्षण की वदहवासी के बाद खुशी तैरने लगी सभापति ने धीरे से कहा लेकिन बडी होशियारी हो। और मूर्तिकार फिर देश दौरे पर निकल पडा जार्च पंचम की खोई हुई नाक का नाप उसके पास था दिल्ली से वह बुम्बई पहुंचा। दादा भाई नौ रोजी गोखले, तिलक, शिवाजी, काँवसजी, जहांगीर, सबकी नाकें टटोली, नापी और गुजरात की ओर भागा-गांधी जी सरदार पटेल, विदुलभाई पटेल, महादेव देसाई, की मूर्तियों को परखा और फिर बंगाल को चला गुरूदेव, रवीन्द्र नाथ, सुभाष चन्द्र बोस, राजा राम मोहन राय,आदि को देखा नाप जोख की और विहार, की ओर चला विहार होता हुआ उत्तर प्रदेश में आया चन्द्रशेखर आजाद विस्मिल मोती लाल नेहरू, मदन मोहन मालवीय की लाटों के पास गाया। घबराहट में मद्रास में भी पहुंचा सत्यमूर्ति को भी देखा और फिर मैसूर केरल आदि सभी प्रदेशों को दौरा करता हुआ पंजाब पहुंचा -लाला लाजपत राय और भगत सिंह की लाटों से सामना हुआ अन्त में दिल्ली पहुंचा और अपनी मुश्किल बयान की पूरे हिन्दुस्तान की परिक्रमा कर आया सब मूर्तियां देख आया सबकी नाकों का नाप लिया पर जार्च पंचम की नाक से सब बडी निकली। राजधानी में सब तैयारियां थी। जार्च पंचम की लाट को मल मल कर नहलाया गया था। रोगन लगाया गया था सब कुछ हो चुका था सिर्फ नाक नहीं थी। बात

फिर बडे हुक्कामों तक पहुँची। बडी खलबली मची–अगर जार्च पंचम के नाक न लग पायी तो फिर रानी के स्वागत करने का मतलब? यह तो अपनी नाक कटाने वाली बात हुई।

लेकिन मूर्तिकार पैसे से लाचार था यानी हार मानने वाला कलाकार नहीं था एक हैरत अंग्रेज ख्याल उसके दिमाग में आया और उसने पहली वाली शर्त दोहरायी। जिस कमरे में कमेटी बैठी हुई थी उसके दरवाजे फिर बन्द किये गये और मूर्तिकार ने अपनी नयी योजना पेश की चूंकि नाक लगाना एक दम जरूरी था इसलिये मेरी राय है कि सवा सौ करोड़ में से कोई एक जिन्दा नाक काटकर लगा दी जाय.... बात के साथ सन्नाटा छा गया कुछ मिनटों की खामोशी के बाद सभापति ने सबकी ओर देखा सबको परेशान देखकर मूर्तिकार धीरे से बोला आप लोग क्यों घबराते है यह काम मेरे ऊपर छोड़ दीजिये नाक चुनना मेरा काम है आपकी सिर्फ इजाजत चाहिये। कानाफूसी हुई और मूर्तिकार को इजाजत दे दी गयी। अखबार में सिर्फ इतना छापा कि नाक का मसला हल हो गया और राज पथ पर इंडिया गेट के पास वाली जार्च पंचम की लाट के नाक लग रही है।

नाक लगने से पहले फिर हथियार बन्द पहरेदारों की तैनाती हुई मूर्ति के आस पास का तालाब सुखाकर साफ किया गया उसकी रवाब निकाली गयी और ताजा पानी भरा गया ताकि जो जिन्दा नाक लगाई जाने वाली थी वह सूखने न पाये। इस बात की खबर जनता को नहीं थी यह सब तैयारियाँ भीतर–भीतर चल रही थी रानी के आने का दिन नजदीक आता जा रहा था मूर्तिकार अपने बताये हल से परेशान था। जिन्दा नाक लाने के लिये उसने कमेटी वालों से कुछ और मद्द माँगी वह उसे दे दी गयी लेकिन इस हिदायत के साथ कि एक खास दिन हर हालत में नाक लग जानी चाहिए।

आखिर वह दिन आया जार्च पंचम के नाक लग गयी। सब अखबारों ने खबरे छापी कि जार्च पंचम के जिन्दा नाक लगायी गयी है यानी ऐसी नाक जो कतई पत्थर की नहीं लगती। लेकिन उस दिन के अखबारों में एक गौर करने की बात थी उस दिन देश में कहीं भी किसी उद्घाटन की खबर नहीं थी किसी ने कोई फीता नहीं काटा था। कोई भी सार्वजनिक सभा नहीं हुई थी कहीं भी किसी का अभिनन्दन नहीं हुआ था कोई मानपत्र भेंट करने की नौबत नहीं आयी थी किसी हवाई अड्डे या स्टेशन पर स्वागत समारोह नहीं हुआ था किसी का ताजा चित्र नहीं छपा था सब अखबार खाली थे पता नहीं ऐसा क्यों हुआ था नाक तो सिर्फ एक चाहिये थी और वह भी बुत के लिये।

जीवन ठहराव और गति के बीच का संतुलन है – *ओशो*

शांति की शुरुआत मुस्कुराहट से होती है – *मदर टेरेसा*

हिन्दी के माध्यम से ही सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है। – *स्वामी दयानन्द*

जाने अपने देश के कानून को

राजेश कुमार दीक्षित
अधिकारी सर्वेक्षक

धारा	307	हत्या की कोशिश
धारा	302	हत्या का दण्ड
धारा	376	बलात्कार
धारा	395	डकैती
धारा	377	अप्राकृतिक कृत्य
धारा	396	डकैती के दौरान हत्या
धारा	120	षडयंत्र रचना
धारा	365	अपहरण
धारा	201	सबूत मिटाना
धारा	34	समान आशय
धारा	412	छीना छपटी
धारा	378	चोरी
धारा	141	विधि विरूद्ध जमाव
धारा	191	मिथ्या साक्ष्य देना
धारा	300	हत्या करना
धारा	309	आत्म हत्या की कोशिश
धारा	310	ठगी करना
धारा	312	गर्भपात करना
धारा	351	हमला करना
धारा	354	स्त्री लज्जा भंग
धारा	362	अपहरण
धारा	415	छल करना
धारा	445	गृहभेदन
धारा	494	पति/पत्नी के जीवन काल में पुन: विवाह
धारा	499	मानहानि
धारा	511	आजीवन कारावास से दंडनीय अपराधों को करने के प्रत्यन के लिए दंड।

पाँच रोचक जीवनोपयोगी तथ्य

1. **शाम के वक्त महिलाओं की गिरफतारी नहीं हो सकती :-**

   कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसीजर, सेक्शन 46 के तहत शाम 6 बजे के बाद और सुबह 6 बजे के पहले भारतीय पुलिस किसी भी महिला को गिरफतार नहीं कर सकती, फिर चाहे गुनाह कितना भी संगीन क्यों ना हो, अगर पुलिस ऐसा करते हुए पाई जाती है तो गिरफतार करने वाले पुलिस अधिकारी के खिलाफ शिकायत दर्ज की जा सकती है। इससे उस पुलिस अधिकारी की नौकरी खतरे में आ सकती है।

2. **सिलेंडर फटने से जान-माल के नुकसान पर 40 लाख रूपये तक का बीमा कवर क्लेम कर सकते हैं:-**

   पब्लिक लायबिलिटी पालिसी के तहत अगर किसी कारण आपके घर में सिलेंडर फट जाता हैं और आपको जान-माल का नुकशान झेलना पड़ता है तो आप तुरन्त गैस कम्पनी से बीमा कवर क्लेम कर सकते है। आपको अवगत करा दें कि गैस कम्पनी से 40 लाख रूपये तक का बीमा क्लेम कराया जा सकता है, यदि कम्पनी आपका क्लेम देने से मना करती है या टालती है तो इसकी शिकायत पर , दोषी पाये जाने पर गैस कम्पनी का लायसेन्स रद्द हो सकता है।

3. **कोई भी होटल चाहे वो 5 स्टार ही क्या ना हो,-आप फ्री में पानी पी सकते है और बाथरूम इस्तेमाल कर सकते है:-**

   इंडियन सीरीज एक्ट 1887 के अनुसार आप देश के किसी भी होटल में जाकर पानी मांगकर पी सकते है, और उस होटल का वाश रूम भी इस्तेमाल कर सकते है , होटल छोटा हो या 5 स्टार, वा आपको रोक नहीं सकते, यदि होटल मालिक या कोई कर्मी आपको पानी पिलाने या वाश रूम इस्तेमाल करने से रोकता तो शिकायत पर उसका लायसेन्स रद्द हो सकता है।

4. **गर्भवती महिलाओं को नौकरी से नहीं निकाला जा सकता :-**

   मैटरनिटी बेनीफिट एक्ट 1961 के मुताबिक गर्भवती महिलाओं को अचानक नौकरी से नहीं निकाला जा सकता। नोटिस देनी होगी और प्रेगनेंसी के दौरान लगने वाल खर्च का कुछ हिस्सा देना होगा, अगर वा ऐसा नहीं करता है, शिकायत होने पर कम्पनी बन्द हो सकती है।

5. **पुलिस अधिकारी आपकी शिकायत लिखने से मना नहीं कर सकता :-**

   आईपीसीसी के सेक्शन 166-ए के अनुसार कोई भी पुलिस अधिकारी आपकी शिकायत दर्ज करने से इनकार करने पर उसके खिलाफ वरिष्ठ पुलिस के दफतर में शिकायत दर्ज कराई जा सकती है एवं दोषी पुलिस अधिकारी 6 माह से 1 वर्ष तक जेल हो सकती है या फिर उसकी नौकरी तक जा सकती है।

<u>जाने धारा 370</u>

1. धारा 370 की वजह से कश्मीर में RTI लागू नहीं है।
2. CAG लागू नहीं होता।
3. धारा-370 की वजह से कश्मीर में बाहर के लोग जमीन नहीं खरीद सकते है।
4. धारा-370 की वजह से ही पाकिस्तानियों को भी भारतीय नागरिकता मिल जाती है।

इसके लिए पाकिस्तानियों को केवल किसी कश्मीरी लड़की से शादी करनी पड़ती है।

सुविचार

देवेन्द्र कुमार सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

- एकता का किला सबसे सुरक्षित होता है। न वह टूटता है और न उसमें रहने वाला कभी दुखी होता है। —अज्ञात
- किताबें ऐसी शिक्षक हैं जो बिना कष्ट दिए, बिना आलोचना किए और बिना परीक्षा लिए हमें शिक्षा देती हैं। — अज्ञात
- ऐसे देश को छोड़ देना चाहिए जहाँ न आदर है, न जीविका, न मित्र, न परिवार और न ही ज्ञान की आशा। —विनोबा
- विश्वास वह पक्षी है जो प्रभात के पूर्व अंधकार में ही प्रकाश का अनुभव करता है और गाने लगता है। —रवींद्रनाथ ठाकुर
- कुल की प्रतिष्ठा भी विनम्रता और सदव्यवहार से होती है, हेकड़ी और रुआब दिखाने से नहीं। —प्रेमचंद
- अनुभव की पाठशाला में जो पाठ सीखे जाते हैं, वे पुस्तकों और विश्वविद्यालयों में नहीं मिलते। —अज्ञात
- जिस प्रकार थोड़ी-सी वायु से आग भड़क उठती है, उसी प्रकार थोड़ी-सी मेहनत से किस्मत चमक उठती है। —अज्ञात
- अपने को संकट में डाल कर कार्य संपन्न करने वालों की विजय होती है, कायरों की नहीं। —जवाहरलाल नेहरू
- सच्चाई से जिसका मन भरा है, वह विद्वान न होने पर भी बहुत देश सेवा कर सकता है। —पं. मोतीलाल नेहरू
- स्वतंत्र वही हो सकता है जो अपना काम अपने आप कर लेता है। —विनोबा
- जिस तरह रंग सादगी को निखार देते हैं उसी तरह सादगी भी रंगों को निखार देती है। सहयोग सफलता का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। —मुक्ता
- दुख और वेदना के अथाह सागर वाले इस संसार में प्रेम की अत्यधिक आवश्यकता है। —डॉ. रामकुमार वर्मा
- डूबते को तारना ही अच्छे इंसान का कर्तव्य होता है। —अज्ञात
- सबसे अधिक ज्ञानी वही है जो अपनी कमियों को समझकर उनका सुधार कर सकता हो। —अज्ञात
- अनुभव-प्रापित के लिए काफी मूल्य चुकाना पड़ सकता है पर उससे जो शिक्षा मिलती है वह और कहीं नहीं मिलती। —अज्ञात
- जिसने अकेले रह कर अकेलेपन को जीता उसने सबकुछ जीता। —अज्ञात

- अच्छी योजना बनाना बुद्धिमानी का काम है पर उसको ठीक से पूरा करना धैर्य और परिश्रम का। —कहावत
- जो पुरुषार्थ नहीं करते उन्हें धन, मित्र, ऐश्वर्य, सुख, स्वास्थ्य, शांति और संतोष प्राप्त नहीं होते। —वेदव्यास
- नियम के बिना और अभिमान के साथ किया गया तप व्यर्थ ही होता है। - वेदव्यास
- जैसे सूर्योदय के होते ही अंधकार दूर हो जाता है वैसे ही मन की प्रसन्नता से सारी बाधाएँ शांत हो जाती हैं। —अमृतलाल नागर
- जैसे उल्लू को सूर्य नहीं दिखाई देता वैसे ही दुष्ट को सौजन्य दिखाई नहीं देता। —स्वामी भजनानंद
- लोहा गरम भले ही हो जाए पर हथौड़ा तो ठंडा रह कर ही काम कर सकता है। —सरदार पटेल
- एकता का किला सबसे सुदृढ़ होता है। उसके भीतर रह कर कोई भी प्राणी असुरक्षा अनुभव नहीं करता। —अज्ञात
- फूल चुन कर एकत्र करने के लिए मत ठहरो। आगे बढ़े चलो, तुम्हारे पथ में फूल निरंतर खिलते रहेंगे। —रवींद्रनाथ ठाकुर
- सौभाग्य वीर से डरता है और कायर को डराता है। —अज्ञात
- प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, परंतु उससे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है। —हरिऔध
- प्रकृति अपरिमित ज्ञान का भंडार है, पत्ते-पत्ते में शिक्षापूर्ण पाठ हैं, परंतु उससे लाभ उठाने के लिए अनुभव आवश्यक है। —हरिऔध
- जिस मनुष्य में आत्मविश्वास नहीं है वह शक्तिमान हो कर भी कायर है और पंडित होकर भी मूर्ख है। —राम प्रताप त्रिपाठी
- मन एक भीरु शत्रु है जो सदैव पीठ के पीछे से वार करता है। —प्रेमचंद
- असत्य फूस के ढेर की तरह है। सत्य की एक चिनगारी भी उसे भस्म कर देती है। —हरिभाऊ उपाध्याय
- समय परिवर्तन का धन है। परंतु घड़ी उसे केवल परिवर्तन के रूप में दिखाती है, धन के रूप में नहीं। —रवींद्रनाथ ठाकुर
- संतोष का वृक्ष कड़वा है लेकिन इस पर लगने वाला फल मीठा होता है। —स्वामी शिवानंद
- विचारकों को जो चीज आज स्पष्ट दीखती है दुनिया उस पर कल अमल करती है। —विनोबा
- विश्वविद्यालय महापुरुषों के निर्माण के कारखाने हैं और अध्यापक उन्हें बनाने वाले कारीगर हैं। —रवींद्र
- हजार योद्धाओं पर विजय पाना आसान है, लेकिन जो अपने ऊपर विजय पाता है वही सच्चा विजयी है। —गौतम बुद्ध
- जबतक भारत का राजकाज अपनी भाषा में नहीं चलेगा तबतक हम यह नहीं कह सकते कि देश में स्वराज है। —मोरारजी देसाई

- मुठ्ठी भर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं। —महात्मा गांधी
- सत्याग्रह बलप्रयोग के विपरीत होता है। हिंसा के संपूर्ण त्याग में ही सत्याग्रह की कल्पना की गई है। —महात्मा गांधी
- दूसरों पर किए गए व्यंग्य पर हम हँसते हैं पर अपने ऊपर किए गए व्यंग्य पर रोना तक भूल जाते हैं। —रामचंद्र शुक्ल
- धन उत्तम कर्मो से उत्पन्न होता है, प्रगल्भता (साहस, योग्यता व दृढ़ निश्चय) से बढ़ता है, चतुराई से फलता फूलता है और संयम से सुरक्षित होता है। —विदुर
- वाणी चाँदी है, मौन सोना है, वाणी पार्थिव है पर मौन दिव्य। —कहावत
- मुहब्बत त्याग की माँ है। वह जहाँ जाती है अपने बेटे को साथ ले जाती है। —सुदर्शन
- मुस्कान थके हुए के लिए विश्राम है, उदास के लिए दिन का प्रकाश है तथा कष्ट के लिए प्रकृति का सर्वोत्तम उपहार है। —अज्ञात
- जिस तरह घोंसला सोती हुई चिड़िया को आश्रय देता है उसी तरह मौन तुम्हारी वाणी को आश्रय देता है। —रवींद्रनाथ ठाकुर
- साफ सुथरे सादे परिधान में ऐसा यौवन होता है जिसमें अधिक उम्र छिप जाती है। —अज्ञात
- ज्ञानी जन विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी पुरुष आवश्यकता से और पशु स्वभाव से। —कौटिल्य
- जो काम घड़ों जल से नहीं होता उसे दवा के दो घूँट कर देते हैं और जो काम तलवार से नहीं होता वह काँटा कर देता है। —सुदर्शन
- जैसे रात्रि के बाद भोर का आना या दुख के बाद सुख का आना जीवन चक्र का हिस्सा है वैसे ही प्राचीनता से नवीनता का सफर भी निश्चित है। —भावना कुँअर
- धन के भी पर होते हैं। कभी-कभी वे स्वयं उड़ते हैं और कभी-कभी अधिक धन लाने के लिए उन्हें उड़ाना पड़ता है। —कहावत
- प्रसिद्ध होने का यह एक दंड है कि मनुष्य को निरंतर उन्नतिशील बने रहना पड़ता है। —अज्ञात
- प्रत्येक व्यक्ति की अच्छाई ही प्रजातंत्रीय शासन की सफलता का मूल सिद्धांत है। —राजगोपालाचारी
- अपने अनुभव का साहित्य किसी दर्शन के साथ नहीं चलता, वह अपना दर्शन पैदा करता है। —कमलेश्वर
- मैं ने कोई विज्ञापन ऐसा नहीं देखा जिसमें पुरुष स्त्री से कह रहा हो कि यह साड़ी या स्नो खरीद ले। अपनी चीज वह खुद पसंद करती है मगर पुरुष की सिगरेट से लेकर टायर तक में वह दखल देती है। —हरिशंकर परसाई

- ‘शि’ का अर्थ है पापों का नाश करने वाला और ‘व’ कहते हैं मुक्ति देने वाले को। भोलेनाथ में ये दोनों गुण हैं इसलिए वे शिव कहलाते हैं। —ब्रह्मवैवर्त पुराण
- काम की समाप्ति संतोषप्रद हो तो परिश्रम की थकान याद नहीं रहती। —कालिदास
- रंगों की उमंग खुशी तभी देती है जब उसमें उज्जवल विचारों की अबरक चमचमा रही हो। —मुक्ता
- नारी की करुणा अंतरजगत का उच्चतम विकास है, जिसके बल पर समस्त सदाचार ठहरे हुए हैं। —जयशंकर प्रसाद
- चंद्रमा, हिमालय पर्वत, केले के वृक्ष और चंदन शीतल माने गए हैं, पर इनमें से कुछ भी इतना शीतल नहीं जितना मनुष्य का तृष्णा रहित चित्त। —वशिष्ठ
- इस संसार में प्यार करने लायक दो वस्तुएँ हैं-एक दुख और दूसरा श्रम। दुख के बिना हृदय निर्मल नहीं होता और श्रम के बिना मनुष्यत्व का विकास नहीं होता। —आचार्य श्रीराम शर्मा
- बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। —आचार्य रामचंद्र शुक्ल
- संवेदनशीलता न्याय की पहली अनिवार्यता है। —कुमार आशीष
- शब्द पत्तियों की तरह हैं जब वे ज्यादा होते हैं तो अर्थ के फल दिखाई नहीं देते। —अज्ञात
- अपने दोस्त के लिए जान दे देना इतना मुश्किल नहीं है जितना मुश्किल ऐसे दोस्त को ढूँढ़ना जिस पर जान दी जा सके। —मधूलिका गुप्ता
- जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें गति और शक्ति न पैदा हो, हमारा सौंदर्य प्रेम न जागृत हो, जो हममें संकल्प और कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह हमारे लिए बेकार है वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। —प्रेमचंद
- आकाश में उड़ने वाले पंछी को भी अपने घर की याद आती है। —प्रेमचंद
- किताबें समय के महासागर में जलदीप की तरह रास्ता दिखाती हैं। —अज्ञात
- देश कभी चोर उचक्कों की करतूतों से बरबाद नहीं होता बल्कि शरीफ लोगों की कायरता और निकम्मेपन से होता है। —शिव खेड़ा
- बीस वर्ष की आयु में व्यक्ति का जो चेहरा रहता है, वह प्रकृति की देन है, तीस वर्ष की आयु का चेहरा जिंदगी के उतार-चढ़ाव की देन है लेकिन पचास वर्ष की आयु का चेहरा व्यक्ति की अपनी कमाई है। —अष्टावक्र
- यह सच है कि पानी में तैरनेवाले ही डूबते हैं, किनारे पर खड़े रहनेवाले नहीं, मगर किनारे पर खड़े रहनेवाले कभी तैरना भी नहीं सीख पाते। —वल्लभ भाई पटेल
- ऐ अमलतास किसी को भी पता न चला तेरे कद का अंदाज जो आसमान था पर सिर झुका के रहता था, तेज धूप में भी मुस्कुरा के रहता था। —मधूलिका गुप्ता

- बेहतर जिंदगी का रास्ता बेहतर किताबों से होकर जाता है। —शिल्पायन
- दस गरीब आदमी एक कंबल में आराम से सो सकते हैं, परंतु दो राजा एक ही राज्य में इकट्ठे नहीं रह सकते। —मधूलिका गुप्ता
- राष्ट्र की एकता को अगर बनाकर रखा जा सकता है तो उसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है। —सुब्रह्मण्यम भारती
- मानव हृदय में घृणा, लोभ और द्वेष वह विषैली घास हैं जो प्रेम रूपी पौधे को नष्ट कर देती है।— सत्य साईं बाबा
- बिखरना विनाश का पथ है तो सिमटना निर्माण का। —कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
- समझौता एक अच्छा छाता भले बन सकता है, लेकिन अच्छी छत नहीं। —मधूलिका गुप्ता
- सज्जन पुरुष बादलों के समान देने के लिए ही कोई वस्तु ग्रहण करते हैं। —कालिदास
- सतत परिश्रम, सुकर्म और निरंतर सावधानी से ही स्वतंत्रता का मूल्य चुकाया जा सकता है। —मुक्ता
- दुख को दूर करने की एक ही अमोघ औषधि है- मन से दुखों की चिंता न करना। —वेदव्यास
- बिना ग्रंथ के ईश्वर मौन है, न्याय निद्रित है, विज्ञान स्तब्ध है और सभी वस्तुएँ पूर्ण अंधकार में हैं। —अज्ञात
- पराजय से सत्याग्रही को निराशा नहीं होती बल्कि कार्यक्षमता और लगन बढ़ती है। —महात्मा गांधी
- अंग्रेजी माध्यम भारतीय शिक्षा में सबसे बड़ा विघ्न है। सभ्य संसार के किसी भी जन समुदाय की शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा नहीं है। —महामना मदनमोहन मालवीय
- हँसमुख व्यक्ति वह फुहार है जिसके छींटे सबके मन को ठंडा करते हैं। —अज्ञात
- मुट्ठी भर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में दृढ़ आस्था है, इतिहास की धारा को बदल सकते हैं। —महात्मा गांधी
- रामायण समस्त मनुष्य जाति को अनिर्वचनीय सुख और शांति पहुँचाने का साधन है। —मदनमोहन मालवीय
- उजाला एक विश्वास है जो अँधेरे के किसी भी रूप के विरुद्ध संघर्ष का बिगुल बजाने को तत्पर रहता है। ये हममें साहस और निडरता भरता है। —डॉ. प्रेम जनमेजय

कविता

जयशंकर प्रसाद यादव
(सहायक)

खो जाओ इनमें

पेड़ मत काटो,
तालाब मत पाटो।
हवा में जहर मत घोलो,
नदी में नाले मत खोलो।
मिट्टी को ज्यादा मत निचोड़ो,
प्रकृति का सन्तुलन मत तोड़ो।
उसके अनमोल उपहारों को लूटो मत,
जरूरत-भर खाओ, ठूसो मत।।

पक्षियों को चहकने दो,
वन-लताएँ महकने दो
झरनों का संगीत बहने दो,
सघन-कुन्ज की छाँव रहने दो।।

कोयल का कूजन, मेघों का गर्जन,
बरखा की रिमझिम, मोरों का नर्त्तन,
माटी की खुशबू, शीतल हवाएँ ,
निसर्ग का आँचल, कालाी घटाएँ,
अनमोल है यह प्रातः बयार,
इनसे बजाओ जीवन-सितार।।

आँखों से पी लो, अहसास जी लो,
थोड़ी भी बुद्धि तो इनको न लीलो।
खोना न इनको, खो जाओ इनमें ,
बस जायेगा आनन्द-संसार मन में।।

हिन्दी है वरदान

हिन्दी सुनकर विज्ञ जन क्यों करते हो हाय!
बस अंग्रेजी मेम से, करना है गुड बॉय।।
काम-काज से है सुगम, हिन्दी का उत्थान।
सच्चे मन से कीजिए निज भाषा का मान।।
जन साधारण के लिए, हिन्दी है वरदान।
सरल-सुगम साहित्य से मिले ज्ञान-विज्ञान।।

हिन्दी के बढ़ते चरण रोक सकेगा कौन !
अद्वितीय वर्चस्व से चकित विश्व है मौन।।
शक्ति अगाध-अदम्य है, विपुल शब्द भण्डार।
अलंकार, रस छन्दमय हिन्दी का परिवार।।
टीवी, इण्टरनेट करें हिन्दी का गुणगान।
गूगल, यूनी कोड से विश्व-ग्राम-सा मान।।

प्रमुख विश्वभाषा बने हिन्दी हो सिरमौर।
प्रगति, नियति, स्वीकृति मिले छवि उज्जवल हो और।।
भूमण्डल छायी हुई हिन्दी की अभिव्यक्ति।
विज्ञापन बाजार से बढ़ी अपरिमित शक्ति।।
प्रोद्योगिकी-क्रान्ति से छाया जन सन्चार।
विश्व खड़ा है द्वार पर, हिन्दी करे दुलार।।

पढ़ना, लिखना, बोलना सुगम कार्य व्यवहार।
करें मन, वचन, कर्म से हिन्दी का सत्कार।।
देवनागरी लिपि सरल सहज सुबोध समर्थ।
पढ़ना-लिखना एक सम कभी न अर्थ अनर्थ।।

लघु कथा

प्रदीप कुमार आर्य
अधिकारी सर्वेक्षक

''एक थप्पड़''

हम लोग जोशीमठ से आगे तपोवन में नेशनल थर्मल पावर के एक परियोजना सर्वेक्षण का कार्य कर रहे थे, जिसके अन्तर्गत सात किलोमीटर की एक सुरंग बननी थी उसकी प्रारम्भिक सर्वेक्षण करने हम वहाँ गये थे। इस कार्य के दौरान मुझे हेमकुण्ड, फूलों के घाटी एवं बद्रीनाथ की घूमने का अवसर प्राप्त होगया। सर्वेक्षण में आमतौर पर चार से पाँच लोगों की टीम होती है। एक टीम के सदस्य शाहीजी टोपो आक्सीलरी पद पर थे। वे भारतीय सेना से सेवानिवृत्ति होने के बाद भारतीय सर्वेक्षण विभाग में सर्वेक्षण कार्य हेतु भर्ती हुए थे, रात में प्रायः हम लोग साथ ही खाना खाते थे, एक दिन खाना खाते-खाते वह बहुत भावुक हो गये और रोने भी लगे। मैंने सांत्वना देते हुए पूछा- बताइये बात क्या है? हम लोग उसका हल निकालेंगे, उन्होने बताया कि जब मैं घर से चल रहा था तो मेरी माँ ने एक ऐसी बात कही जिसके कारण मैं दुखी हो गया।

बातो-बातो मे पता चला कि उसकी माँ अपनी नहीं है, दरअसल सौतेली माँ है, फिर मैंने मन मे सोचा- कि सौतेली माँ है दुखी होना स्वाभाविक है, फिरभी दुख का कारण जानने का प्रयास किया उन्होंने बताया कि मेरी माँ (सौतेली) है। जब मै छोटा था मेरा पूरा ध्यान रखती थी, जब कभी पैसे की जरूरत हो तो काम जाने बिना ही पैसे दे देती थी, कभी भी उसके प्यार में नफरत नहीं दिखाई दी। उसके सगे बच्चों से मेरी लड़ाई हो जाती थी तो वह पिटाई भी अपने बच्चों की करती थी। जब मेरा फौज मे नौकरी लगी, नौकरी के बाद घर आता था मेरे पसंद के अनुसार खाना बनाती थी मेरी पूरी तरह से ख्याल रखती थी। फिर मैंने पूछा- जब तुम्हारी माँ इतना ध्यान रखती है, तो तुम्हारा दुखी होने का कारण क्या है।

फिर उसने बताया-जब मैं फिल्ड के लिए निकल रहा था, माँ ने कहा बद्रीनाथ के पास कैम्प है, तुम्हारे पापा तो बद्रीनाथ घुमाते-घुमाते रह गये, बेटा कम से कम तुम्हीं दर्शन करा देते। मैंने तुम्हारा इतना ध्यान रखा, कितनी भी गलतियाँ होने पर भी एक भी थप्पड़ मैने तुम्हें नहीं मारा होगा। फिर उसकी बात सुनकर मै सोचने लगा---- कि मैं सिर्फ एक थप्पड़ के लिए तरस रहा था, जिसके लिए जानबूझकर गलतियाँ करता था पर तब भी मुझे थप्पड़ नहीं मारा, जिसके कारण मैं रास्ते भर दुखी था। फिर शांत चित्त से भावनाओं को छिपाने की कोशिश करने लगा।

फिर मैंने उससे कहा - आप अभी माँ को फोन करो, कहो कि देहरादून से सुबह आने वाली बस से यहाँ आये, आप उसे पहले बद्रीनाथ का दर्शन कराओ उसके बाद आगे काम करना।

''इलाज''

हमारे आफिस के वरिष्ठ अधिकारी की बात है जिन्होंने बातों-बातों में मुझे सुनाया था, ससुर जी एक अधिकारी सेवानिवृत्ति हो चुके थे। समय के साथ-साथ आँखो में मोतिया बिन्दु हो गया, बहुत सारे आँख के अस्पतालों में दिखाया आमतौर पर मोतिया बिन्दु के आपरेशन के लिए बीस-पच्चीस हजार रूपये लगते थे, उन्हें इलाज बहुत महंगा लगा इसलिए उन्होंने आपरेशन नहीं कराया, आँखो की रोशनी कम होती गयी। किसी ने बतायाा था कि नेपाल में आठ हजार में आपरेशन होता है, लेकिन फिर भी

इलाज नहीं कराया, ऐसा नहीं कि पैसों की तंगी थी उनकी आदत जो 1980 की थी। इस कारण हर चीज की कीमत 1980 के कीमत से तुलना करते थे।

वरिष्ठ अधिकारी ने सोचा चलो हम समझाते है, शायद वे मान जाये। फिर वह बोले– हमारे जमाने में मोतियाबिन्दु का आपरेशन पाँच सौ में हो जाता था, आज देखो बाबू, दस हजार में भी आपरेशन नहीं हो पा रहा है। वरिष्ठ अधिकारी ने कहा– आप नाहक परेशान हो रहे है, हमारे जानने वाले बहुत सारे डाक्टर है जो आठ हजार में आपरेशन कर देंगे और बढ़िया लेंस भी लगा देंगे। फिर सोचा –ऐसा तो नहीं बाकि पैसा तुम दे दोगे, अगर तुमने ऐसा किया तो दामाद के पैसों से इलाज कराने से मेरा परलोक बिगड़ जायेगा। बाबू जी आप खामख्वाह चिंता कर रहे है, लखनऊ में ऐसे जानने वाले डाक्टर मुफ्त में भी इलाज कर देगें।

मोतियाबिन्दु का आपरेशन सफलतापूर्वक हो गया लेंस लग गया उन्होंने डाक्टर को बुलाया और पूछा मेरे इलाज का कितना पैसा हुआ। डाक्टर ने कहा– बाबूजी जो देंगे उसे आर्शीवाद समझ कर रख लेंगे, उन्होने आठ हजार रूपये डाक्टर को दिये। साहब ने डाक्टर को पहले ही समझा दिया था कि जितना पैसा देंगे आप ले लिजियेगा, शेष पैसा मैं भुगतान करूँगा। इस तरह बाबूजी का आपरेशन हो ही गया और उनकी भावनाओं को ठेस भी नहीं पहुँची।

''पारिवारिक सामंजस्य''

हमारे लखनऊ के ऑफिस में समतुल्य पद पर एक वरिष्ठ साथी थे। उन्होंने पारिवारिक सामंजस्य का अद्‌भुत मिसाल प्रस्तुत किया था। वरिष्ठ साथी की पत्नी सरकारी नौकरी में है, परिवार सारा एक साथ संयुक्त रूप से रहता है। संयुक्त परिवार में होने के कारण किसी आयोजन पर साथी उनकी पत्नी खर्च की जिम्मेदारी होती थी, समारोह तो समाप्त हो जाता था, परन्तु पत्नी के ऊलाहने अगले समारोह तक चलते रहते थे। पत्नी बोलती थी आपके पिताजी है पैसे दबाकर रखे हैं कुछ आयोजन होता है वो तो मस्ती करते है जेब हल्की हम लोगो की होती है––––। पत्नी की किच–किच ऐसे ही चलती रहती थी, लेकिन समस्या का निदान नहीं मिल रहा था। धीरे–धीरे समय बीतता गया, फिर घरेलू आयोजन हुए पैसे भी उसी तरह खर्च हुए, पत्नी की किच–किच कुछ लम्बी ही चलती जा रही था। फिर उसने अपने पत्नी को बताया– अब मै पिताजी से बोल देता हूँ, घर पर कोई भी खर्च होगा पैसा आप स्वयं खर्च करेंगे। पत्नी को आश्वस्त हो गयी चलो पिताजी पैसे खर्च करेंगे।

इस तरह समय बीतता गया, फिर घर में समारोह का आयोजन होने वाला था। वरिष्ठ साथी ने अपने जी0पी0एफ0 से पैसे निकाले और पिताजी को चुपके से पैसे दे दिये, पिताजी को समझा दिया, इस आयोजन के सारे खर्चों का आप इस पैसे से करना, परन्तु यह मत बताईयेगा कि यह पैसा मैंने दिया। पिताजी ने मुझे ऊपर से नीचे तक देखा, तु इतना कमजोर हो गया कि तू अपने घर वाली से डर रहा है, देख अपनी मां को एक आवाज नही निकलती है। फिर मैने कहां– देखिये पिताजी आपका जमाना कुछ और था जब पत्नियाँ अपनी पति की सेवा करती थी जो पति कह देता था वही उसकी नियति बन जाती थी। परन्तु पत्नी स्वयं पैसे कमाती हैं, इसलिए सोचती है हर चीज में बराबरी की भागीदारी हो,इसलिए हमारे पारिवारिक सामंजस्य को बनाये रखने के लिए यह सब करना जरूरी है।

अंततः उनके पिताजी समझ गये, इस तरह तब तक चलता रहा जब तक उनके पिताजी थे, इस तरह पत्नी भी खुश और सारा आयोजन भी ठीक ढंग से हो रहा है।

''तेरी माँ तो भीख मांगती है''

सुबह ऑफिस आते वक्त मैंने देखा कि मेरे आफिस का एक साथी अपनी माँ को आफिस के गेट के पास छोड़ दिया, मैंने

सोचा हो सकता है, शायद डाक्टर को दिखाने लाया हो। फिर मैने उस पर ध्यान नहीं दिया, कई बार सुबह अक्सर मिल जाता था। हमेशा अपनी माँ को कार्यालय गेट के साथ छोड़ देता था। एक दिन अचानक दोपहर में कार्यालय से बाहर जाते वक्त देखा उसकी माँ भीख मांग रही है। अपना ध्यान उसकी माँ के केन्द्रित कर दिया कोई और तो नहीं फिर पूरी तरह से आश्वस्त हो गया उसकी माँ ही है। दोपहर में लंच के समय उसके पास मैं गया बोला तुम्हें पता है " तेरी माँ भीख मांग रही है "। मैंने सोचा मेरी बात को सुनकर जरूर गुस्सा करेगा, क्योंकि मैंने व्यंगात्मक लहजे से उससे कहा था, उसने मुझसे धीरे से कहा मुझे पता है। फिर मैंने बोला तुझे शर्म नहीं आती तेरी माँ भीख मांग रही है, फिर भी कुछ नहीं बोला लंच बाक्स समेटा वहाँ से उठकर चला गया।

उसने कुछ न बोलने से मेरा मन और भी विचलित हो गया। कार्यालय की छुट्टी हुई। उसकी माँ ठीक टाइम पर आ गई उसने अपने स्कूटर पर बैठाया अपने घर को चल दिया। फिर भी उसकी माँ यदा-कदा भीख मांगते मिल जाती थी। मैंने बात करने की कोशिश किया परन्तु उसने कुछ भी बात नहीं की।

साथी एक दिन अचानक मिल गया। मुझसे बोला- तू मेरी माँ में बहुत इन्ट्रेस्ट ले रहा है। इतने लोग आफिस में है किसी ने आज तक नहीं पूछा। मैंने उसके भावों को समझते हुए उससे बोला बुरा मत मानो, ऐसे ही जिज्ञासा हुई-- आखिर क्या कारण है कि तुम्हारी माँ भीख मांगती है।

तब उसने बताया मै घर में अकेला लड़का हूँ मेरे पिताजी भी नहीं है। मेरी माँ का कौन देखभाल करेगा। क्यों घर में तुम्हारी बीबी बच्चे है , घर भी ठीक है फिर भी इधर-उधर भटकने से अच्छा है कि घर में रहती। मेरी बीबी और मेरी माँ में पटती नहीं थी मेरे शादी के कुछ दिन बाद बीबी और माँ बिना बात के लड़ाई होती रहती थी। आफिस में आने से लड़ाई सुलझाने में काफी मेहनत करना पड़ता है। मेरी बीबी लड़ाई करने के बाद मायके चली जाती थी। दोनों बच्चों का एडमिशन करा दिया है उसको स्कूल कौन छोड़ेगा उसे लायेगा कौन। माँ की जिद भी जानता और पत्नी की जरूरत के समझौता किया है। सुबह अपनी माँ को साथ लाता हँ साथ ही ले जाता हँ। शुरू-शुरू में पोल के नीचे बैठी रहती थी तो लोग उसे भिखारी समझ के पैसे देने लगे। पैसे मिलने लगे तो वो पैसे मांगने लगी। लेकिन मैंने अपनी माँ को सामने चाय-नाश्ता, खाना कुछ भी फ्री नहीं देता हूँ उसका पैसा मैं देता हूँ। मेरी माँ भीख के पैसे पाती है और सारा पैसा दान में खर्च कर देती है। मैंने बोला मुझे माफ कर दो जैसे तेरी माँ खुश रहे।

1. **राष्ट्र देश के अच्छे दिमाग क्लॉस रूम के आखिरी बैंचों पर मिल सकते हैं** – *डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम*
2. **हिंदी में राष्ट्रभाषा बनने की पूर्ण क्षमता है** – *राजाराम मोहनराय*
3. **उस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया जाना चाहिए जो देश के सबसे बड़े हिस्से में बोला जाती हो, अर्थात हिन्दी** – *रवीन्द्रनाथ ठाकुर*

समय बड़ा बलवान

देवेन्द्र कुमार सिंह
प्रवर श्रेणी लिपिक

जब कोई तुम्हारा दिल दुखाये।

तो चुप रहना बेहतर है।।

क्योंकि जिन्हें हम जवाब नही देते।

उन्हें वक्त जबाव जरूर देता है।।

जीवन का सबसे बड़ा गुरू वक्त होता है।

क्योंकि जो वक्त सिखाता है।

वो कोई नहीं सीखा सकता।।

अपनापन तो हर कोई दिखाता है।

पर अपना कौन है ये तो वक्त बताता है।।

किसी की मजबूरियों पे ना हँसिये।

कोई मजबूरियाँ खरीद कर नही लाता।।

डरियें वक्त की मार से।

बुरा वक्त किसी को बताकर नही आता।।

सदा उनके कर्जदार रहिये।

जो आपके लिये कभी खुद का वक्त नही देखते।।

वक्त की यारी तो हर कोई करता है।

मेरे दोस्त मजा तो तब है।।

जब वक्त बदल जाये।

और यार ना बदले।।

एक दूसरे के लिये जीने का नाम ही जिन्दगी है।

इसलिये वक्त उन्हें दो जो तुम्हे चाहते है दिल से।।

पथ की चिन्ता क्या?

तेरी चाह है सागरमथ भूधर,
उद्देश्य अमर पर पथ दुश्कर

कपाल कालिक तू धारण कर
बढ़ता चल फिर प्रशसित पथ पर

जो ध्येय निरन्तर हो सम्मुख
फिर अघन अनिल का कोइ हो रुख

कर तू साहस, मत डर निर्झर
है शक्त समर्थ तू बढ़ता चल

जो राह शिला अवरुद्ध करे
तू रक्त बहा और राह बना

पथ को शोणित से रन्जित कर
हर कन्टक को तू पुष्प बना

नश्वर काया की चिन्ता क्या?
हे पन्थी पथ की चिन्ता क्या?
है मृत्यु सत्य माना पाति
पर जन्म कदाचित महासत्य

तुझे निपट अकेले चलना है
हे नर मत डर तू भेद लक्ष्य

इस पथ पर राही चलने में
साथी की आशा क्यों निर्बल

भर दम्भ कि तू है अजर अमर
तेरा ध्येय तुझे देगा सम्बल

पथ भ्रमित न हो लम्बा पथ है
हर मोड खड़ा दावानल है

चरितार्थ तू कर तुझमे बल है
है दीर्घ वही जो हासिल है

बन्धक मत बन मोह पाशों का
ये मोह बलात रोकें प्रतिपल

है द्वन्द्व समर में मगर ना रुक
जो नेत्र तेरे हो जायें सजल

बहते अश्रु की चिन्ता क्या
हे पन्थी पथ की चिन्ता क्या

1 **ईर्ष्या तथा अंहकार को दूर कर संगठित होकर, दूसरों के लिए कार्य करना सीखो** – *स्वामी विवेकानन्द*

2 **सपना वह नहीं है जो आप नींद में देखें सपना वह है जो आपको नींद ही न आने दे** – *डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम*

आवश्यक जानकारी

छमांशु दीक्षित, इंजीनियरिंग छात्र
पुत्र श्री राजेश कुमार दीक्षित अधिकारी सर्वेक्षक

PAN	Permanent Accout Number
PDF	Portable Document Format
HDFC	Housing Development Finance Corporation
SIM	Subscriber Identity Module
ATM	Automated Teller Machine
IFSC	Indian Financial System Code
Wi-Fi	Wireless Fidelity
GOOGLE	Global Organization of oriented Group Language of Earth
YAHOO	Yet Another Hierarchical Officious Oracle
WINDOW	Wide Interactive Network Development for Office work Solution
VIRUS	Vital Information Resources under siege
UMTS	Universal Moblie Telecommunications System.
OLED	Organic Light-emitting Diode.
SIM	Subscriber Identity Module.
LED	Light Emitting Diode.
USB	Universal Serial Bus
WLAN	Wireless local Area Network.
LED	Liquid Crystal Display
GPRS	General Pocket Radio Service.
HS	HOTSPOT
GSM	Global System for Mobile Communication.
DELL	Digital Electronic link library.
TFT	Thin Film Transistor.
AMR	Adaptive Multi- Rate.
IVRS	Interactive Voice Response System.
COLD	Chronic Obstructive Lung disease.
JOKE	Joy of kids Entertainment.
OK	Objection Killed.
SMIL	Sweet Memories in lips Expression.

मानचित्र विक्रय केन्द्र

हरीओम द्विवेदी
सर्वेक्षण सहायक

भारतीय सर्वेक्षण विभाग में मानचित्र विक्रय केन्द्र का एक मुख्य स्थान है। जिसमें भिन्न-2 पैमाने पर विभिन्न प्रकार के मानचित्रों का विक्रय किया जाता है। वर्तमान समय में देश के अन्दर तरह-तरह के प्रोजेक्ट, सरकारी गैर-सरकारी तथा प्राइवेट संस्थाओं द्वारा लगाए जा रहे है, जिसमें भारतीय सर्वेक्षण विभाग के मानचित्रों को खरीद कर ये संस्थायें ले जा रही है तथा इन्हीं मानचित्रों के द्वारा अपने कार्य को कर रहे है। मानचित्र का उपयोग प्रत्येक क्षेत्र में किया जाता है, बगैर मानचित्र के हम किसी भी लक्ष्य तक नहीं पहुँच सकते हैं। युद्ध से लेकर विकास की प्रगति तक मानचित्र ही सहायक रहा है। पूरे देश में भारतीय सर्वेक्षण विभाग के प्रत्येक कार्यालय में एक मानचित्र विक्रय केन्द्र खुला हुआ है। जहाँ से हर क्षेत्र के लोग उसे खरीद कर लाभ उठा रहे हैं। वर्तमान समय में ओपन सीरीज मानचित्र की मांग ग्राहको द्वारा की जा रही है, जिसे भारतीय सर्वेक्षण विभाग उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभा रहा है। हार्ड कापी के साथ-2 साफ्ट कापी को भी ग्राहक खरीदने में रूचि रखते है परन्तु मानचित्र की बिक्री और अधिक बढ़ाने के लिए इसका प्रचार-प्रसार कराने की आवश्यकता है। जिससे कि देश की प्रत्येक जनता इसके महत्व को समझे और इसका उपयोग अपने कार्य क्षेत्र में पूरा करें।

बिक्री के लिये उपलब्ध मानचित्र
मानचित्र विक्रय केन्द्र, भारतीय सर्वेक्षण विभाग

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, लखनऊ में सभी प्रकार के मानचित्रों का विक्रय, मानचित्र विक्रय केन्द्र, लखनऊ में किया जाता है। इस केन्द्र पर 1:50,000 के ओ.एस.एम. श्रेणी के सभी मानचित्र उपलब्ध हैं। वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य एवं समीपवर्ती राज्यों के सीमाओं के 1:50,000 के सभी मानचित्र विक्रय हेतु इस केन्द्र पर उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। किंतु विशेष मांग होने पर इन्हें भी उपलब्ध करा दिया जाता है। इसके अतिरिक्त अर्न्तराष्ट्रीय एवं उ.प्र. राज्य के नेपाल सीमाओं पर लगे शीट अभी विक्रय हेतु उपलब्ध नहीं हैं।

इस कार्यालय में बहुत सारे उपभोक्ता किसी भी पैमाने पर मानचित्र की माँग करते हैं। विक्रय हेतु मानचित्र 1:50,000 पैमाने पर ही उपलब्ध हैं। अन्य पैमाने के मानचित्र उपभोक्ताओं के मांग पर बनाये जाते हैं। जिस पर आये खर्च उपभोक्ता को वहन करना पड़ता है।

मानचित्र विक्रय केन्द्र पर अहमदाबाद, बेंगलूरू, बीकानेर, कोलकाता, हावड़ा, चण्डीगढ़ चेन्नई, दार्जिलिंग, डलहौजी, देहरादून, दिल्ली, गांधी नगर, ग्वालियर, हैदराबाद एवम् सिकन्दराबाद आदि कई महत्वपूर्ण शहरों के पर्यटक मानचित्र उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त आगरा, अलीगढ़, बरेली, गाजियाबाद, गोरखपुर, हरिद्वार, जयपुर, झांसी, कानपुर के परिदर्शी मानचित्र (गाइड) भी उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त निम्न प्रकार के मानचित्र विक्रय हेतु उपलब्ध हैं –

1) **<u>ट्रैकिंग मानचित्र (Trekking Map)</u>** :- बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्री एवं यमुनोत्री कुल्लू घाटी, कुमायूं पहाड़ियां, कश्मीर, शिमला हिल्स के ट्रेकिंग रूट के इस मानचित्र 1:250,000 पैमाने पर दर्शाया गया है।

2) **<u>जिला परियोजना मानचित्र (District Planning Map)</u>** :- उ.प्र. एवं अन्य राज्यों के जिला परियोजना मानचित्र (District Planning Map) पैमाना 1:250,000 पर उपलब्ध है। वर्तमान में आगरा, बदायूं, बागपत, बरेली, बहराइच, एटा, इटावा, फरूखाबाद, फिरोजाबाद, हाथरस, जालौन, मैनपुरी, मऊ, मेरठ, मुरादाबाद, मुजफ्फरनगर, पीलीभीत, रामपुर, सहारनपुर, शाहजहांपुर के मानचित्र उपलब्ध हैं।

3) **<u>दीवारी मानचित्र (Wall Map)</u>** :- दीवार पर लगाने के लिए भारत एवं निकटवर्ती देश, भारत राजनैतिक, भारत का प्राकृतिक मानचित्र, रेलवे मानचित्र, सड़क मानचित्र, विश्व का मानचित्र, स्वतन्त्रता आन्दोलन के पुनीत स्थल, भारत के नेशनल पार्क के मानचित्र विभिन्न पैमाने पर उपलब्ध हैं।

4) **<u>प्लास्टिक उच्चावन (रिलीफ) मानचित्र (Plastic Relief Map)</u>** :- प्लास्टिक रिलीफ मानचित्र में भारत प्राकृतिक, एंव राजनैतिक एवं ऋषिकेश से बद्रीनाथ मार्ग का मानचित्र उपलब्ध है।

5) **<u>पुरातन मानचित्र सिरीज में (Antique Map)</u>** :- इस केन्द्र पर पुराने मानचित्र बम्बई (अब मुम्बई), देहरादून एवं समीपवर्ती क्षेत्र (1840), लखनऊ, उन्नाव और रायबरेली (1868), 19वीं शताब्दी के भारतीय अन्वेषक, अवध एवं इलाहाबाद के निकटवर्ती क्षेत्र (1780), दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र (1807) के मानचित्र उपलब्ध हैं।

6) **<u>भारत के ज्ञानवर्धक मानचित्र (Education Map)</u>** :- छात्रों एवं शिक्षकों के लिए मुख्यत: पहाड़ी श्रेणियां एवं नदियाँ, नेशलन पार्क एवं अभयवन, भारत के मोटर मार्ग एवं दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र के मानचित्र, शिक्षा मानचित्र, माउन्ट एवरेस्ट, स्कूल एटलस, अन्टार्कटिका व अन्य मानचित्र उपलब्ध हैं।

<u>स्थलाकृतिक मानचित्र (Topographical Map)</u>

1) ओपन सीरीज मानचित्र 1:50,000 पैमाने पर (Open Series Map WGS 84-UTM System in scale 1:50K)

2) 1:25,000, 1:250,000 पैमाने पर मुद्रित मानचित्र (Everest – Polyconic System)

<u>सामान्य दीवारी मानचित्र (General Wall Maps)</u>

1. भारत और निकटवर्ती देश, पैमाना 1:2·500,000
2. भारत और निकटवर्ती देश, पैमाना 1:12,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
3. भारत और निकटवर्ती देश, पैमाना 1:16,000,000
4. भारत और निकटवर्ती देश, पैमाना 1:8,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
5. भारत–राजनैतिक, पैमाना 1:15,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
6. भारत का प्राकृतिक मानचित्र, पैमाना 1:15,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
7. भारत का प्राकृतिक मानचित्र, पैमाना 1:4,500,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
8. भारत का राजनैतिक मानचित्र, पैमाना 1:4,000,000 (बंगला, गुजराती, कननड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, तमिल संस्करण)
9. भारत का राजनैतिक मानचित्र, पैमाना 1:4,000,000 (अंग्रेजी संस्करण)
10. भारत का रेलवे मानचित्र, पैमाना 1:3,500,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
11. भारत का सड़क मानचित्र, पैमाना 1:2,500,000
12. विश्व का मानचित्र, पैमाना 1:20,000,000
13. स्वतंत्रता आन्दोलन के पुनीत स्थल, पैमाना 1:4,000,000 (हिन्दी संस्करण)
14. भारत का बाल मानचित्र, पैमाना 1:4,000,000 (हिन्दी और अंग्रेजी संस्करण)
15. भारत के नेशनल पार्क, पैमाना 1:5,000,000

16. विश्व मानचित्र, पैमाना 1:40,000,000
17. विश्व मानचित्र, पैमाना 1:40,000,000 (हिन्दी संस्करण)
18. विश्व मानचित्र (चार भागों में) पैमाना 1:25,000,000

1:1,000,000 पैमाने पर राज्य मानचित्र (State Map)

*प्रतिबन्धित

1. आंध्र प्रदेश
2. अरूणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैण्ड और त्रिपुरा
3. बिहार
4. चण्डीगढ़, दिल्ली हिमाचल प्रदेश, हरियाणा और पंजाब
5. दादरा और नगर हवेली, गुजरात और महाराष्ट्र
6. गोवा, दमण और दीव और कर्नाटक
7. *जम्मू और कश्मीर
8. कर्नाटक
9. केरल, पाण्डिचेरि, तमिलनाडु और लक्षद्वीप
10. मध्य प्रदेश
11. उड़ीसा
12. राजस्थान
13. सिक्किम, पैमाना 1:15,00,000
14. *उत्तर प्रदेश
15. पश्चिमी बंगाल
16. उत्तराखण्ड
17. झारखण्ड
18. छत्तीसगढ़

प्लास्टिक उच्चावच (रिलीफ) मानचित्र (Plastic Relief Map)

1. भारत-प्राकृतिक, पैमाना 1:15,000,000
2. भारत-राजनैतिक, पैमाना 1:15,000,000
3. ऋषिकेश से बद्रीनाथ का मार्ग मानचित्र, पैमाना 1:250,000

पर्यटक मानचित्र सिरीज, पैमाना 1:50,000 (Tourist Map)

1. अहमदाबाद
2. बेंगलूर
3. बीकानेर
4. कोलकाता एवं हावड़ा
5. चण्डीगढ़
6. चेन्नई
7. दारजिलिंग
8. डलहौजी
9. देहरादून
10. दिल्ली
14. इंदौर
15. जयपुर
16. खजुराहो
17. कुल्लू
18. महाबलेश्वर
19. मुम्बई
20. मसूरी
21. मैसूर
22. पटना
23. शिलांग

11. गांधीनगर	24. रामेश्वरम और कन्याकुमारी
12. ग्वालियर	25. बड़ौदा
13. हैदराबाद एवं सिकंदराबाद	26. उत्तरांचल

भारत ज्ञानवर्धक मानचित्र सिरीज (Educational Map Series)

1. पहाड़ी श्रेणियां और नदियां, पैमाना 1:5,000,000
2. नेशनल पार्क और अभयवन, पैमाना 1:5,000,000
3. भारत का मोटर मार्ग मानचित्र
4. दिल्ली और निकटवर्ती क्षेत्र (शीट सं0 1 व 2)

परिदर्शी गाईड मानचित्र (*प्रतिबंधित)

1. आबू	23. चित्तौड़गढ़	45. कोटा	67. ऋषिकेश
2. अगरतला	24. डलहौजी	46. कुल्लू	68. रोहतक
3. आगरा	25. देहरादून	47. लखनऊ	69. सहारनपुर
4. अहमदनगर	26. दिल्ली	48. चेन्नई	70. सम्भल
5. अलीगढ़	27. धांगध्रा	49. मदुरै	71. सिकन्दराबाद और बोलारम
6. इलाहाबाद	28. इटावा	50. मंगलौर	72. शाहजहांपुर
7. अल्मोड़ा	29. गंगानगर	51. मनाली'	73. शिमला
8. अलवर	30. गाजियाबाद	52. मथुरा एवं वृन्दावन	74. सोपुर'
9. औरंगाबाद	31. गोरखपुर	53. मेरठ	75. श्रीनगर'
10. आजमगढ़	32. हरिद्वार	54. मुरादाबाद	76. सूरतगढ़
11. बेंगलूर	33. हुब्बल्लि	55. मसूरी और लंढ़ौर	77. टिहरी
12. बारमेर	34. हैदराबाद	56. मुजफ्फरनगर	78. तेजपुर
13. बारामूला	35. इम्फाल	57. मैसूर	79. तिरूच्चिरापल्ली
14. बरेली	36. जयपुर	58. नैनीताल और भुवाली	80. त्रिश्शूर
15. भरतपुर	37. जमशेदपुर	59. नगांव'	81. तिरूवनंतपुरम
16. भुवनेश्वर	38. जामनगर	60. नसीराबाद	82. उदयपुर
17. बिहार शरीफ	49. जौनपुर	61. नाथद्वारा	83. वाराणसी
18. बीजापुर	40. झांसी	62. पणजी'	84. वल्लौर
19. चमोली और गोपेश्वर'	41. जोरहाट	63. पटना	85. मैनपुरी
20. चम्बा	42. कानपुर	64. पाण्डिचेरि	86. राँची
21. चन्दौसी	43. करनाल	65. पुणे और खड़की	87. उत्तरकाशी
22. चण्डीगढ़	44. कोडेक्कानल	66. रानीखेत	

ट्रैकिंग मानचित्र, पैमाना 1:250,000

1. बदरीनाथ
2. बदरी-केदार
3. गंगोत्री-यमुनोत्री
4. कुल्लू घाटी

5. कुमायूं पहाड़ियाँ
6. जम्मू और कश्मीर का मार्ग मानचित्र, शीट सं0 1
7. जम्मू और कश्मीर का मार्ग मानचित्र, शीट सं0 2
8. शिमला हिल्स

विविध (मानचित्र/प्रकाशन) (Miscellaneous Maps/Publication)

1. एन्टार्कटिका–मैत्री (1993 संस्करण), पैमाना 1:5,000
2. भारत और निकटवर्ती स्थानों के नामों के चीनी पर्याय
3. मीटरी पद्धति के स्थलाकृतिक मानचित्रों के लिए रूढ़ चिन्ह
4. शिक्षा–मानचित्र जिन पर स्वेच्छ ग्रिड मुद्रित किये गये हैं, पैमाना 1:50,000
5. केन्द्रीय/राज्य सरकार के विभागों/कार्यालयों और निजी प्रकाशकों द्वारा मानचित्रों के प्रकाशन के लिये अनुदेश
6. स्थलाकृतिक सूचक की कुंजी, पैमाना 1:6,000,000, 1:12,000,000 और 1:15,000,000
7. भूटान का मानचित्र, पैमाना 1:250,000
8. माउन्ट एवरेस्ट
9. पहाड़ी श्रेणियों का विशाल दृश्य जो चकराता के समीप देवबन से दिखाई देता है।
10. पहाड़ी श्रेणियों का विशाल दृश्य जैसा कि लंदौर से दिखाई देता है।
11. ऋषिकेश से बदरीनाथ–केदारनाथ का मार्ग मानचित्र, पैमाना 1:250,000
12. भारत का मार्ग मानचित्र उत्तरी क्षेत्र, जोन, पैमाना 1:2,500,000
13. स्कूल एटलस सामान्य
14. स्कूल एटलस डीलक्स
15. कोलकाता और हावड़ा का नगर मानचित्र
16. मानचित्रों की सहायता से कार्य निष्पादन
17. चण्डीगढ़ और इसके निकटवर्ती क्षेत्र, स्पेशल सिरीज
18. दिल्ली व निकटवर्ती क्षेत्र
19. मोटरिंग एटलस
20. लुधियाना और इसके निकटवर्ती क्षेत्र
21. दिल्ली–देहरादून–मँसूरी का सड़क मानचित्र
22. दिल्ली–आगरा–जयपुर का मार्ग मानचित्र

विशिष्ट मानचित्र

जनसाधारण में मानचित्र के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा पर्यटकों की सहायता के लिए भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा मानचित्र जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसके अन्तर्गत विभिन्न विषयों को लेकर आर्ट कागज पर निर्मित/मुद्रित उच्च कोटि के व आकर्षक और सुविधाजनक रीति से तहबंद मानचित्र जैसे पुरातत्व मानचित्र सीरीज, भारत ज्ञानवर्धक मानचित्र सीरीज, पर्यटक मानचित्र सीरीज (मुख्य नगरों के लिए), राज्य मानचित्र सीरीज इत्यादि उचित मूल्यों पर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इन सीरीज के अन्तर्गत निम्नलिखित मानचित्र प्रकाशित किए गए हैं–

पुरातन मानचित्र सीरीज (Antique Map Series)

1. बम्बई (अब मुम्बई)
2. कौसिमबाजार द्वीप, अनुमानतः 1780
3. देहरादून एवं समीपवर्ती क्षेत्र 1840
4. लखनऊ, उन्नाव तथा रायबरेली जिले – 1868
5. 19वीं शताब्दी के भारतीय अन्वेषक
6. अवध और इलाहाबद तथा निकटवर्ती क्षेत्र अनुमानतः – 1780
7. राजपूताना स्थलाकृतिक सर्वेक्षण (जयपुर का भाग)
8. कालिकाता के निकटवर्ती क्षेत्र का रेखाचित्र, अनुमानतः 1858
9. दिल्ली के निकटवर्ती क्षेत्र का रेखाचित्र, अनुमानतः 1807
10. माउण्ट एवरेस्ट और समीपवर्ती क्षेत्र का प्रथम प्रकाशित मानचित्र – 1930
11. बंगाल के प्रान्तों का मानचित्र अनुमानतः – 1779

जिला परियोजना मानचित्र सिरीज, पैमाना 1:250,000

1. अदिलाबाद
2. आगरा
3. अहमदनगर (दो भागों में)
4. आईजोल
5. अलप्पि
6. अल्मोड़ा
7. अमरेली
8. अमृतसर
9. अनंतपुर (दो भागों में)
10. अन्दमान
11. औरंगाबाद
12. बदांयू
13. बलांगीर
14. बागपत
15. बेलगाम (दो भागों में)
16. बारमेर
17. बारागढ़
18. बरान
19. बर्द्धमान

51. धार
52. धर्मपुरी
53. धारवाड़
54. धीमाजी
55. दुंबुरी
56. धुले
57. दीव
58. दिनाजपुर (दो भागों में)
59. डूंगरपुर
60. ईस्ट गारो हिल्स
61. पूर्वी निमार
62. एटा
63. इटावा
64. फरीदाबाद
65. फरीदकोट
66. फरूखाबाद
67. फिरोजाबाद
68. गया
69. गंगानगर

101. कोच बिहार
102. कोडगू
103. कोहिमा
104. कोल्हापुर
105. कोल्लम
106. कोरापुट
107. कोट्टायम
108. कुरूक्षेत्र
109. लातूर
110. मदुराई
111. महेन्द्रगढ़
112. मैनपुरी
113. मालदाह
114. मलकानगिरी
115. मण्डी
116. मऊ
117. मेडक
118. मेरठ
119. मेहसाना

151. राजकोट
152. रामपुर
153. रत्नागिरी
154. रायगढ़
155. सहारनपुर
156. सागर
157. सम्भलपुर
158. सांगली
159. सरन्स
160. सतारा
161. शाहजहाँपुर
162. शिमोगा
163. सिहोर
164. सिन्धु दुर्ग
165. सीरोही
166. सिरसा
167. सीतामढ़ी
168. सिवन
169. सोलापुर (दो भागों में)

20. बरेली
21. भटिन्डा
22. बनासकांठा
23. बहराइच
24. बेतुल
25. बरूच
26. भीलवाड़ा
27. भिवानी
28. भावनगर
29. भोजपुर
30. भोपाल
31. बीजापुर (दो भागों में)
32. बीकानेर
33. बोन्गांईगांव
34. बुलन्दशहर
35. चम्बा
36. चण्डीगढ़
37. चिक्कमंगलूर
38. चित्रदुर्ग
39. चित्तोड़गढ़ (दो भागों में)
40. चित्तूर
41. चुराचांदपुर
42. चुरू
43. कोयम्बटूर
44. कडप्पा
45. दतिया
46. डलहौजी
47. दमण
48. देहरादून
49. देवगढ़
50. देवास

70. गढ़वाल
71. गोलाघाट
72. गोलपारा
73. गोपालगंज
74. गुना
75. गुलबर्गा
76. गुरदासपुर
77. ग्वालियर
78. हमरीपुर, उना और बिलासपुर
79. हनुमानगढ़
80. हरिद्वार
81. हावड़ा
82. हसन
83. होसंगाबाद
84. हाथरस
85. इडुक्की
86. जालोर
87. जालौन
88. जहांनाबाद
89. जामनगर
90. जमुई
91. झारगुजा
92. जीन्द
93. जोधपुर (दो भागों में)
94. जूनागढ़
95. कैथल
96. कालाहांण्डी
97. कांगड़ा
98. कपूरथला
99. कन्नियाकुमारि
100 करनूल

120. मुरादाबाद
121. मुजफ्फरनगर
122. मुंगेर
123. मुम्बई सिटी तथा मुम्बई उपनगर
124. मुजफ्फरपुर
125. नवरंगपुर
126. नादिया
127. नागौर (दो भागों में)
128. नलगोंडा
129. नालंदा
130. नानदेड
131. नासिक
132. नगाँव
133. नरसिम्हापुर
134. नवादा
135. निकोबार
136. नीलगीरी
137. निजामाबाद
138. नुआपाड़ा
139. पाली
140. पालघाट
141. पलामू
142. पटना
143. पट्टनमलिता
144. पेरियार
145. फेंक
146. पीलीभीत
147. फुलवाणी
148. पूर्निया
149. पुरूलिया
150. रायसेन

170. सोनपुर
171. सोनितपुर
172. दक्षिण गारो हिल्स
173. दक्षिण त्रिपुरा
174. श्रीकाकुलम
175. सूरत
176. सुरेन्द्रनगर
177. सुन्दरगढ़
178. टेमोंग लांग
179. ठाणे
180. टीकमगढ़
181. तिरूनेलवेली
182. तिरूअनन्तामलाई
183. तिरूवनंतपुरम
184. त्रिपुरा (पश्चिमी)
185. त्रिपुरा (दक्षिणी)
186. तूतिकोरन
187. उदयपुर
188. उज्जैन
189. उन्नाव
190. उत्तर-कन्नड़ा
191. वैशाली
192. विदिशा
193. विरूदुनगर (टी)
194. यमुनानगर
195. ओखा
196. जूनहबोटो

सेवानिवृत्ति पर विदाई समारोह

निदेशक, उप निदेशक श्रीराम्, एम.टी.एस.

श्रीराम्, एम.टी.एस.

श्री भारत सिंह, तक. श्रमिक और मो. युनुस, गार्ड

कार्यालय के सदस्य एवं परिवार के सदस्य

पूर्व निदेशक

श्री शेर बहादुर सिंह, सर्वेक्षण सहायक एवं ननकउ

कार्यालय में स्वच्छता अभियान

श्री निदेशक महोदय व अन्य

श्री निदेशक महोदय व अन्य

श्री जे.पी. यादव, सहा. एवं पदम मोहन, प्र. श्रे. लिपिक

श्री राम अधार गिरी, खलासी

श्री चन्द्रशेखर, अवर श्रेणी लिपिक

श्री अरविन्द श्रीवास्तव, सहायक

हिन्दी कार्यशाला एवं अन्य कार्यकलाप

वृक्षारोपण समारोह

निदेशक, उप निदेशक का संबोधन

हिन्दी पखवाड़ा

अन्तराष्ट्रीय योग दिवस

अन्तराष्ट्रीय योग दिवस

राष्ट्रीय पर्व

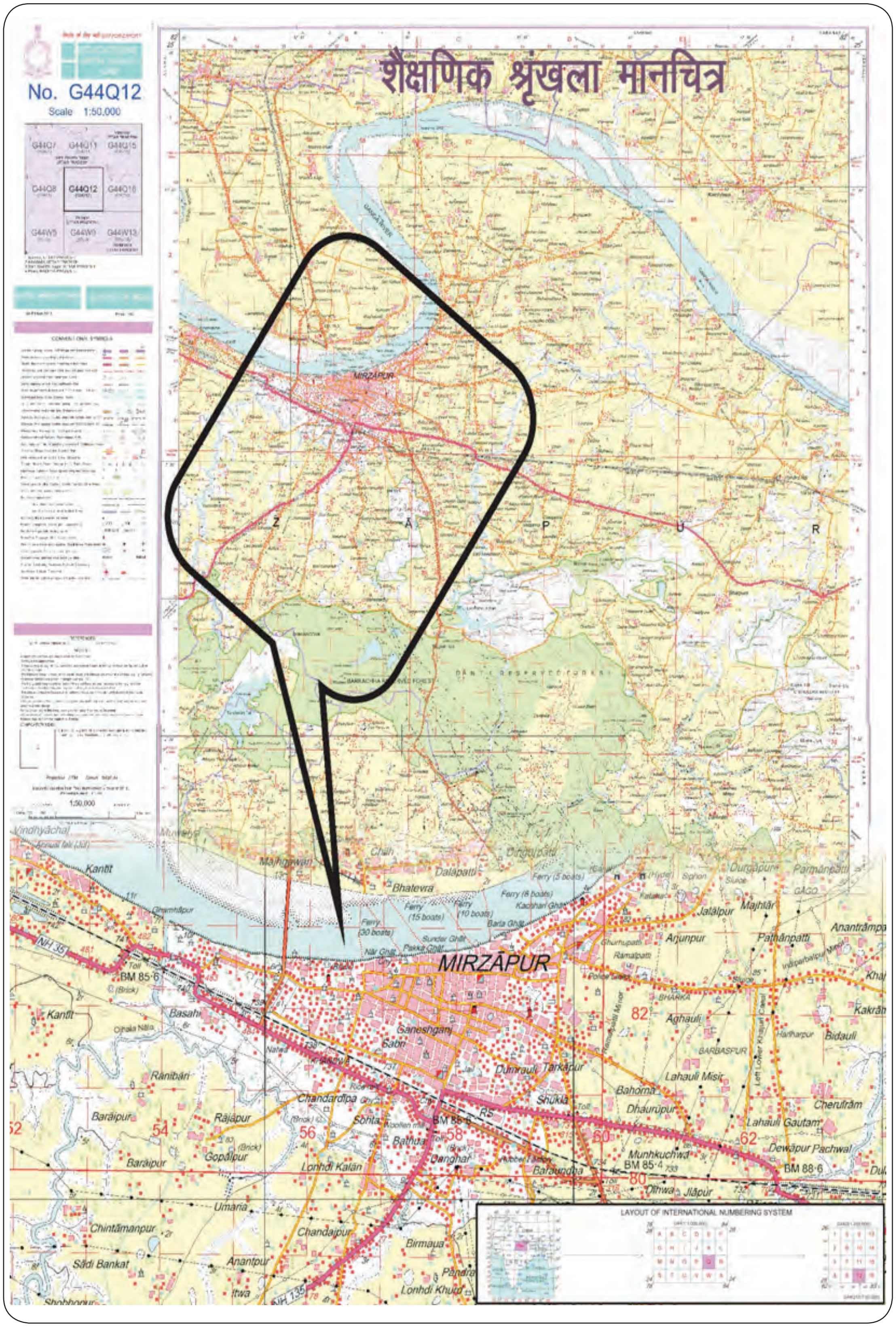
शैक्षणिक श्रृंखला मानचित्र
No. G44Q12
Scale 1:50,000
MIRZAPUR
MIRZĀPUR
LAYOUT OF INTERNATIONAL NUMBERING SYSTEM

पर्वतीय छायांकन दृश्य

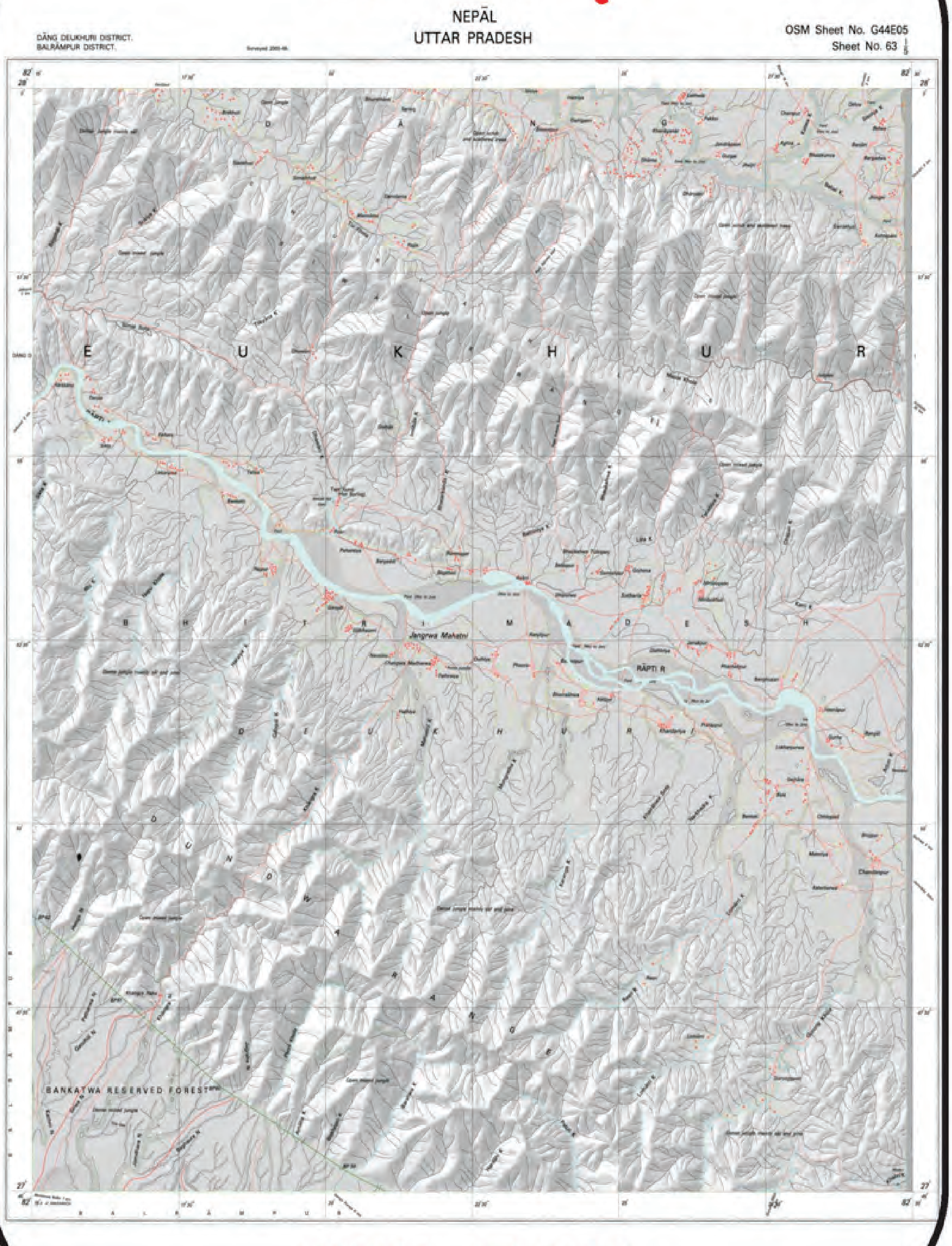

SCALE - 1: 50,000

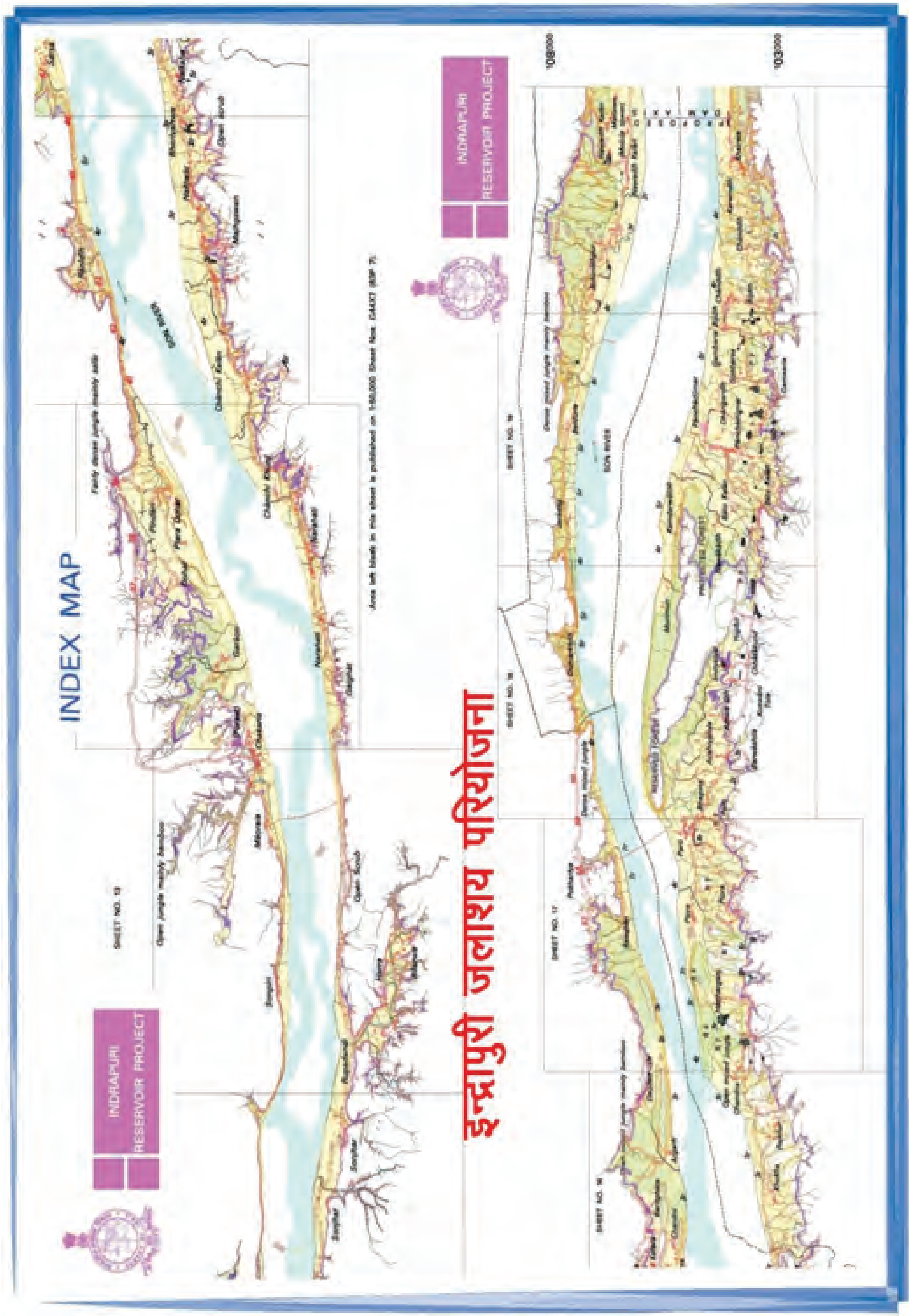
INDEX MAP
INDRAPURI RESERVOIR PROJECT
INDRAPURI RESERVOIR PROJECT
इन्द्रापुरी जलाशय परियोजना

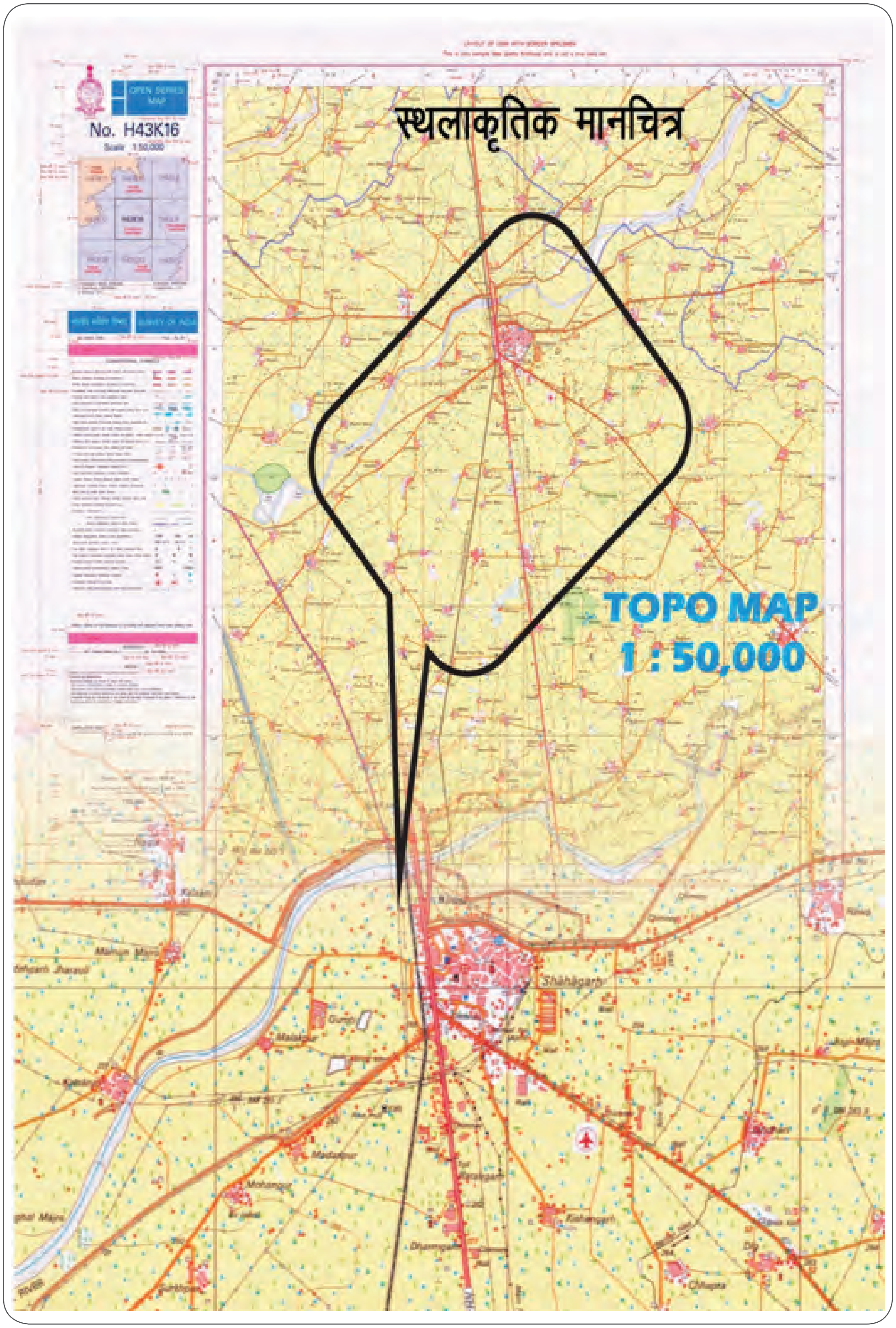
स्थलाकृतिक मानचित्र
No. H43K16
TOPO MAP
1 : 50,000

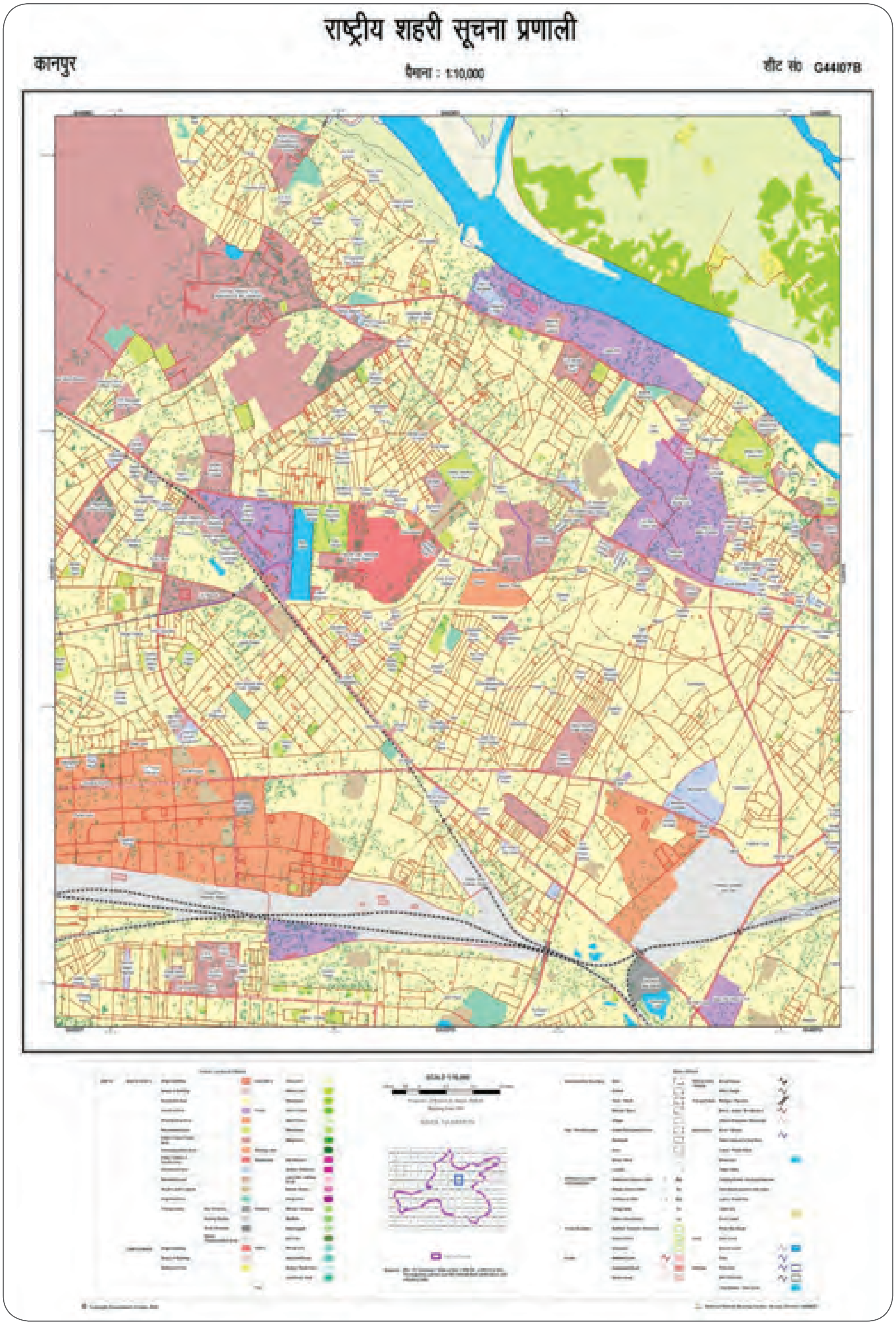
राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली
कानपुर
पैमाना : 1:10,000
शीट सं0 G44I07B

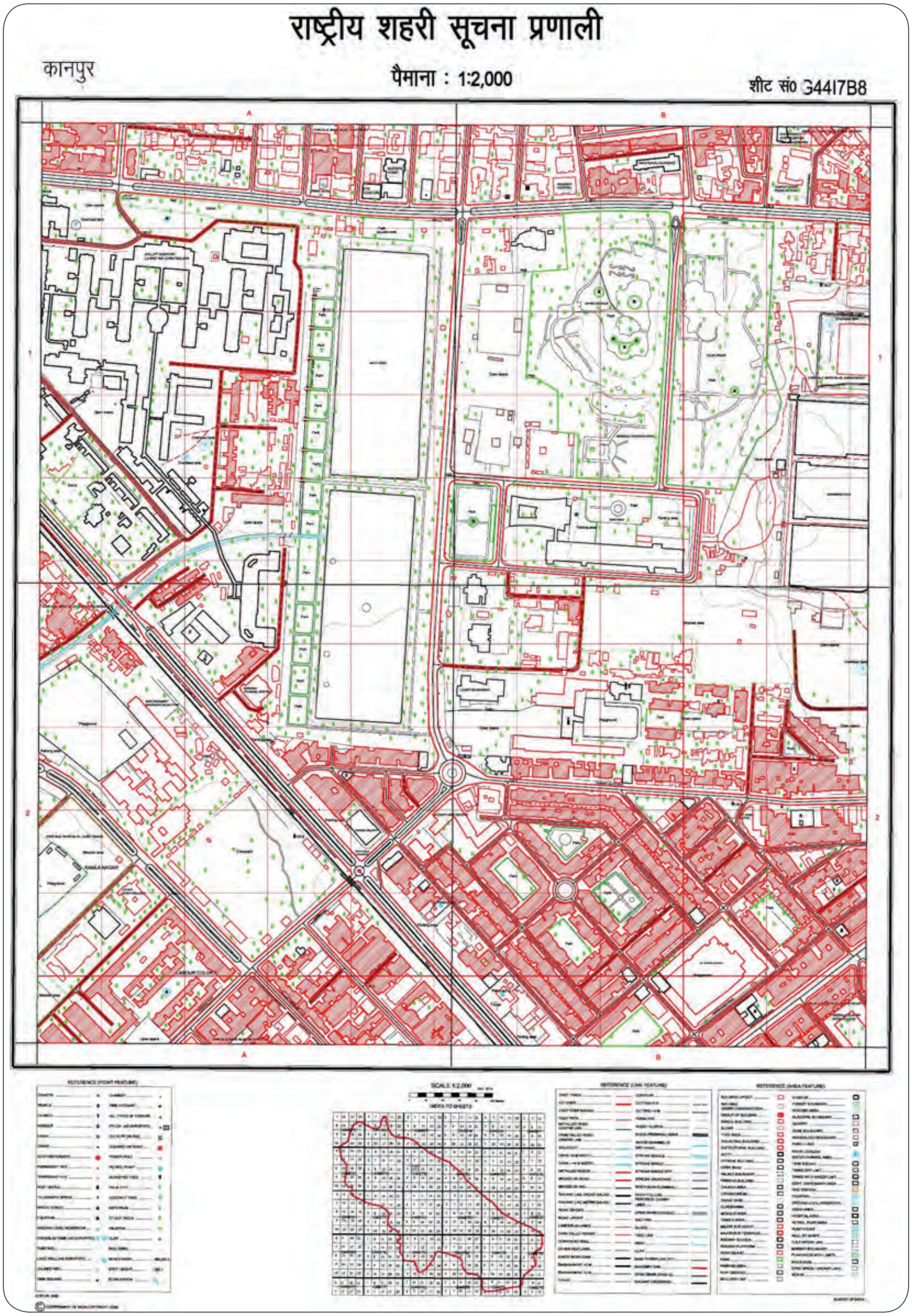
राष्ट्रीय शहरी सूचना प्रणाली
कानपुर
पैमाना : 1:2,000
शीट सं0 G4417B8

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

Survey of India

दि ग्रेट आर्क
The Great Arc

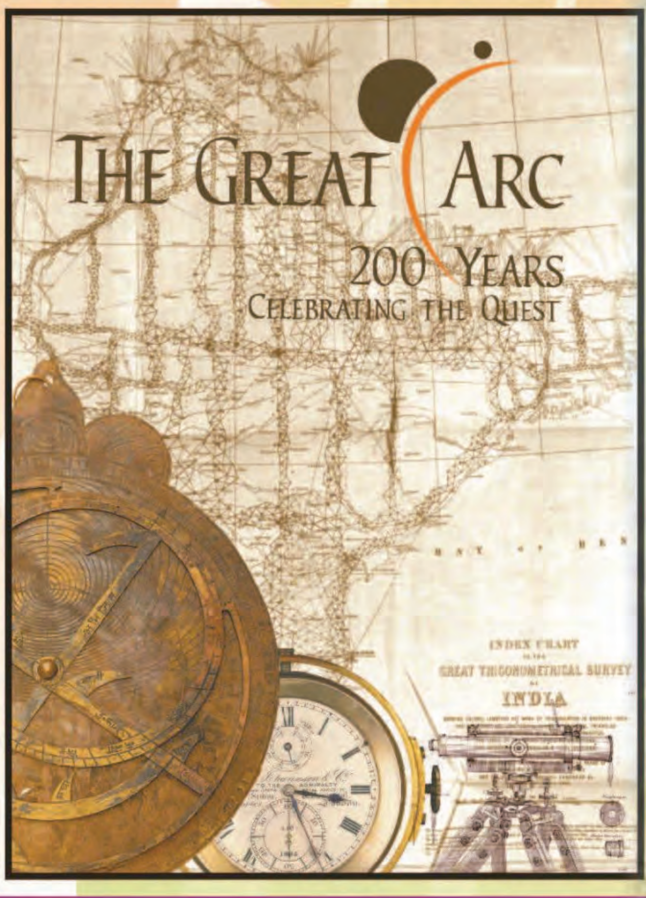

भारतीय डाक एवं तार विभाग द्वारा

भारतीय सर्वेक्षण विभाग का सम्मान।

Survey of India honoured by Department of Indian Posts & Telegraphs

भारतीय सर्वेक्षण विभाग

Survey of India

भविष्य दृष्टि

भारतीय सर्वेक्षण विभाग सुरक्षा, सतत् राष्ट्रीय विकास तथा नवीन सूचना बाजार से सम्बन्धित आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए ग्राहक केन्द्रित, लागत प्रभावी तथा सामयिक भू-स्थानिक आँकड़ा सूचना तथा आसूचना उपलब्ध कराने में अग्रणी भूमिका निभाएगा।

VISION

Survey of India will take a leadership role in providing user focused, cost effective, reliable and quality geospatial data, information and intelligence for meeting the needs of national security, sustainable national development, and new information markets.

helpdesk.soi@gov.in

www.surveyofindia.gov.in

पश्चिमी मुद्रण वर्ग, भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा मुद्रित